
76 Pages

Size- 19x14 cms

- Seventy Nine (79) leaves

(M-45)

(M-45)

॥ ई० ॥ स्वस्तिश्रीहरिगुरुगणेशायन
मः॥ अथसारसंग्रहप्राकृतलिष्यते
॥दोहरा॥भालचंद्रपुनिविघ्नहरधू
म्रवरनभ्रकुटीय॥वक्रहेरनगणप
तिकह्यौहस्तीमुखपूजीय॥१॥एकदं
तगजवदनपुनि।लंबोदरअभिराम
कपिलवरनसुभसुषकरन॥एतेद्वाद
सनाम॥२॥मासमासअधिपतिसुवै
लैमोदकपूजेह॥नमस्कारतुमकौंक
रौ॥दयाबुधिममदेह॥३॥अथदुर्गा
कौनमस्कार॥सुषकरनीदुखनाशि
नीबुद्धिसुरूपअपार॥वाणीविमल
सरस्वती॥अवेआदिकुमार॥४॥श्री
गुरुदेवकौनमस्कार॥श्रीगुरुदेवमना
यकैं वंदूंजुगलकिशोर।देषोसदाप्रस
न्नता कृपाकरौइहवार॥५॥वर्कधनं

१ तरवाघभटप्रभुअत्तआग्रहीरीत।काल
ज्ञानरुयोगज्ञातज्ञानंगधरकीरीत्ति॥६
प्रगटकीयोसिरहंदमैभाषाअत्तिअ
भिराम।सेवकस्यामास्यामकोब्राह्म
नगंगाराम॥७॥किअभक्तिराषौंसुवि
तकियोग्रंथअभिकंद॥भाषारच्यौव
नायकेदोहाचौपईछंद॥८॥दोहरा
॥संवतसत्रहसैवर्षवीतेदसऔर
चारि॥एकमीतहितस्योंकह्यौ।तवय
हकीयोविचार॥९॥अथसाहजहां
अस्तुति॥सभभूपतिसेवाकरैदेहि
दंरुहितकाज॥उदैअस्तलौंमानियै।
ऐसोनिर्मलराज॥१०॥तिथसातैगुरु
वारपुनिकिअपहसुचिमास वैशा
ग्रंथसवमत्थकै।भाषाकियोविला
स॥११॥सहजउक्तउपजीकछुसोमै

करौविचार॥लघुदीर्घअक्षरजहांक
विजनलेहुसवार॥१२॥परकारजकौं
स्रमकीयोममस्वारथकछुनाहि।मन
विचारकैकृपाकरुजेपंडितजगमाहि
॥१३॥सोरठा॥सज्जननीकीरीति।बहु
विकारदुर्ज्जनकरै।तौनतजैपरतीन॥
लहसनदुगंधनातजै॥१४॥दोहरा॥
चंदनसोनेईषजैदुर्ज्जनदुष्टसभावस
ज्जनसतगुरुजोकरै।तौनहितजैसभा
व॥१५॥रोगहोइतनमैवसत।आदिज
नमकेपाप।पुन्यजाप्पतैसभमिटैं।ति
नकेसभसंताप॥१६॥सोरठा॥प्रथम
दीजियैदान।पुनिऔषधकीक्रियाक
रु।होहिसकलपरवान ग्रहदेषिजोदी
जियै॥१७॥चौपई॥औषधदानकरैन
रकोई॥तिहतनरोगनव्यापैकोइ।दया

२ धर्मनिहचलकरचित्त॥जोगमुक्तफल
पावहुनित्त॥अभैदानजोमनमैधरै
निर्भयहोइकर्म्मछैकरै॥विद्यादैमु
र्षज्ञाजाइ॥अन्नदानसभपापमिटाइ
रो प्रथमनिदानरोगकाकीजै॥तौरोगी
कौऔषददीजै॥१८॥दोहरा॥देशअ
वस्थासमझिकै।समैकालपहिचान
तौपुनऔषधदीजिए।भलाहोइतूजा
न॥१९॥अथनाडीपरिक्षालिष्यतेसा
रंगधरमतात॥दोहरा॥करअंगु
ष्टविचारिकैदेषहुंनसासमज्ञान॥क
रहुंचिकित्सासमझिकै।नाडीज्ञीव
वा जमान॥२०॥आदिपित्तपुनिमध्यकफ
अंतपवनहैसोइ॥त्रिविधिनसालख
नकहौजैसीममगतिहोई॥२१॥मैन
ककाककुलंगगतिपित्तनसासमझ २

२। त्रिषक पोत्त पुनिहं सकफ। नाग
जलौकावाइ॥२३॥ चलैवेगपुनि
मंद है। जुग्म रोष को कोप। देषत ही
रोगी तजहुं करि है जीव को लोप॥२
२॥ संनपात्त तीत्त रलवा चलैछी
न लीयै सीत्त। कबहूं चलैवटेर गति
प्रानतजैइ हरीत॥२४॥ हृदय लीयै
चंचल नसा॥ उष्ण रक्त की जानु। स्थि
रात्र प्रबुध जन सुनो श्रांम गंभीर व
षानु॥२५॥ सोरठा॥ तप्त नसा सो हो
इ। चलै वेग ज्वर कोप तै। रोगी नीका
सोइ। कह्यौ ग्रंथ सारिंगधर॥२६॥
अथ षट् रितु वर्ननं॥ दोहरा॥ त्रि
सर प्रथम वरषा सुनग। ग्रीषम सर
द वसंत। माघ आदि है है गनौ षट् रि
तु बूझौ संत॥२७॥ अथ देसत्तीन वर्ननं॥

३ ॥दोहा॥ देस तीन तीनो सुभग जांग
ल और अनूप साधारण अभिराम है
कहौ तिहूं के रूप ॥२८॥ अथ अनूप
देस वर्णनं ॥दोहा॥ रूख बहुत सरि
ता बहुत सीतल सलिल प्रवाह ॥ जल
उतपति पर्वत सभै सकल ऽ छ्तु तह
साह ॥२९॥ स्याल रूख दीर्घ महा देवदा
रु है सोई ॥ उरै अस्त नहि देषियै । छाया
आपै सोइ ॥३०॥ कांनन महँ सुगंध ता
सुंदर सुभग सरूप । कफ कौ कोप सदा
तहां ऐसो देस अनूप ॥३१॥ अथ जांग
ल देस वर्ननं ॥दोहा॥ बारू के थल दे
षियै । गोरे पुरुष विसाल ॥ भूषे ब्याघे प्या
स के । मृग तहं फिरत बिहाल ॥३२॥ अ
तही सूरज तेज तैं । रूष पीयरे पात छा
यऽ दूरू अति तनु रूप गुनि । भूसम पीत है जा
त ॥३३॥ सू कौ सरिता दूरि जल एक कू ३

पहुँ गांउ । मृगमांससरूषासमै पित्तको
पतिहू ठांउ ॥ २४ ॥ अथ साधारनादेस्या
वर्नन ॥ दोहरा ॥ जलनेडै सरिता बहु-
त श्रीतउस्नसमभाइ । कह्यौ पुत्र हारीत
सौं रिषि अत्रसमझाइ ॥ २५ ॥ उदै अस्त-
समदेषिये साधारन अभिराम । बात-
पित्तकफएकसम अद्भुत गंगाराम ॥ २-
६ ॥ अथ सकुन परिक्षा ॥ रसमंजरी म-
तात ॥ दोहरा ॥ वीनभेरमृदंगधुनि-
संषवेदरवगीत ॥ पुत्रायुतयुवती वि-
मल । गोपवस्त्र अरु मीत ॥ २७ ॥ दोहरा ॥
कंन्यागोवरएविमलरजकवस्त्रलीये
स्वेत । मंगलगावत मीन दधि सुनौ वै-
द्यसमहेत ॥ २८ ॥ अथ असुभसकुन ॥ दो- अ
हरा ॥ सर्प्पचर्म्म अंगारतुष नग्न अंध
पुनि सोइ । लेउ हाथ कुवडा मिलै सिद्ध
कहां ते होइ ॥ २९ ॥ गुडकपासकर्दम बुरा
लोणजटाधरि सोई ॥ महिषबहादंहु ला

४ वुरा ॥ भसमलगाई होइ ॥ गेरू रंगे वस्त्र पु
नि ओरू त्रिशूल लिये हाथ ॥ अग्र भा
गए सम भवुरे रोगी ज्ञम कै साथ ॥ ४
रस ६॥ अथ सुभ लछन ॥ मंजरी मतात॥
॥ दोहरा ॥ स्वेत वस्त्र कर ये फल पूर्ण
स्वरहि वहिठ ॥ सुभ वोलत सम भ विधि
चतुर दूत दिख्यहु मदिठ ॥ ४७ ॥ अथ असु
र भ लछन दूत के ॥ दोहरा ॥ वधक कु
ब्ज कुरूप फुनि ॥ येक अछ चांडाल
रूक्ष हृस्व भगवा वसन ये लछन ज
म काल ॥ ४८ ॥ अथ मुष परिक्षा हि
तोपदेषात ॥ दोहरा ॥ कंटक रूक्ष पु
नि । वक्र मुष येम भे दोष समीर । तक्ष्व
रू पुनि पीत ता । ओनन पित्त समीर ॥ ४
९ ॥ दोहरा ॥ गुरू स्निग्ध पुनि । सरस मु
ष कफ लछन ये जानि सवल छनमि
श्रत मिलै जुग्म दोष पुनि सोइ ॥ ५० ॥ ४

10 ॥ अथ वायलछनहेतनिदान ॥ दोहरा ॥
मुत्रपुरिषविलंमतेकडुवातिरूकषाई
तिरैन दीपनवलुकरैकंगुणसोवाषाइ
४७ ॥ फिरैवहुतजागपाकरै ॥ ऊचावो
लैसोइ ॥ रूक्षतेअजीरनमध्यतेवातको
पपुनिहोई ॥ ४८ ॥ मंघरपोषजुमाघमे
भादौंसावनतासु ॥ पुनिअषाढपंडित
कहत ॥ वायराजषटमास ॥ ४९ ॥ दोह
रा ॥ सिरपीडापुनिसंषभुजकर्न ॥ नेत्र
अतिपीर ॥ फूटैभौंहपुनिनासिकाऊ
रभसैनुसमीर ॥ ५० ॥ जंघजानुग्रीवा
त्रषणावरुकुहुफुनिसूल ॥ विरसअ
फारागृष्टताकहेवाइकेमूल ॥ ५१ ॥ अ
थपित्तलछनहेतनिदान ॥ दोहरा ॥ क ल
डुवाषाटाअतिअवणाअतिगरमीअ
तिधूप ॥ लंयनक्रोधआचारतेमनोपि
नकेरूप ॥ ५२ ॥ दोहरा ॥ तिलअल

५ सीपुनमध्यतेकांजी रससंजोग। अर्धरा
त्रिदिनमध्यपुनिवढैपित्तकेरोग॥ पद्य
दोहरा॥ वैद्यगाथश्रेष्ठअरुवनस्तभगका
त्तिकअतिअभिराम। व्यारमांसयेपि
त्तके॥ अरुभुतगंगाराम॥५४॥ अथपि
त्तलछन॥ दोहरा॥ भ्रममदपुनिमुष
ति सोषज्वर॥ अरुवचनमूर्तिमार। प्रस्वेद
किणछमू र्छात्रिषा॥ लछणपित्तविचा
र॥५५॥ दोहरा॥ मुषनषनेत्रसपीतअ
तित्वकविष्टाअतिपीत। मूत्रपित्तपुनि
दाहसुनियेलछनहैमीत॥५६॥ अथ
कफहेतलछननिदान॥ दोहरा॥ अ
तिसीतलरधदूधतैंविषमांसनपुनि
षीरमधुरमद्यपुनिइछुतेवढैश्लेष्म
षीर॥५७॥ सोरठा॥ तिलकटुपिनीषा
इदिनसोवैजागैनही॥ वहुतलोनअ
नषाइ॥ कफकोपछिनमेकरै॥ ५८॥
५

॥चौपई॥फागुनचैतसमैकफराजा॥
अहतोअधमवंछकोसाजा॥पुनयहक
र्मरोगनजानि।हमसकृततेकयौवषा
न॥५९॥अथकफकेलछन॥चौपई॥
भारीअंगभूषकोनास कंडनेत्रस्वेततन
ताप।आलसषेहरतंद्राहोय।रोमहर्ष
सिरभारीसोइ॥पीनसकासगलामुष
बारा॥उपद्रवकफनहीजाइसमारा॥
कफलछनकहेउद्रवभारी कफजव
वढैनजाइसंभारी॥६०॥अथपित्तउ^
पचार॥दोहरा॥स्नानकरैजहांकुजहै
त्तिरैत्तिरंगनजाइ।भोजनमिष्टसुगंधत्ता
सीतलसलिलपिवाइ॥६१॥दोहरा॥
चालनकरैमयूरकासधाकिनेनिस^
वास।भामिनिछोडुसवर्षकीकरतपि
तकोनास॥६२॥अथकफउपचार॥
॥दोहरा॥कडुवातिक्तकषाइतेछार
कसेलासोइ स्वेदविरेचनवनतेतस्रो

६ रिकतेषाइ। अथवाइउपचार॥दोहरा॥
तेलतिल्लोहकोआनिकै। मर्द्दनकीजैअं
गपुनिमज्जनजलतप्तसोमिटैवाइकोसं
ग॥६४॥दोहरा॥ सुरापानउपवासतैत
नुतापनरसोइ॥इहविधिहरैसमीरकौ
विरलाबूझैकोइ॥६५॥इतिश्रीपुरुषो
त्तमआत्मजगंगारामविरचितेभाषा
संबंधेसारसंग्रहनामनाडीपरिक्षादे
श्राकालज्ञानपरिक्षाशुभाशुभलक्ष
नदूतकेवाइपित्तकफहेतउपचारप्र
थमसमुद्देश्रा॥१॥ ॥अथजल
अष्टप्रकारकेकथतं॥दोहरा॥वर्षा
जलओनदीजलअंतरिक्षपुनकूप।उ
सरचोटतडागजलकहेआठजल
कूप॥६६॥अथनदीजलगुण॥दोह
रा॥ लघुरूषापुनिसीतजलअतिप
वित्रहैसोइ।वातश्लेषमकोकरैसावन
६

भारीसोई ॥ ६१ ऊसरजलगुण ॥ दोहरा
॥ पित्तत्रषाजलसोकरै । तापकुष्टव्रण१
सोइ ॥ कंठसोषपुनछारगुरजलउस
रअसमसोइ ॥ ६८ ॥ अथवर्षाजल ॥ दो
हरा ॥ कषाइउष्मपुनकफहरनगु^
लमहरनक्रिम्रोग । षाजुकरनपिउका
करनै । वर्षाजलयहजोग ॥ ६९ ॥ करैपि
त्तकफवातजित ॥ उष्मछारगुरता^
सोइ ॥ कछुनिंदतयातेकह्यौकरपी
डेसभकोइ ॥ ७० ॥ अथकूपजलगु
ण ॥ दोहरा ॥ दीपनपाचनकफह
रतपित्तकरनअभिराम । लघुरूषा
समदोषहरि ॥ नहिजलकूपसमान
७१ ॥ ठावजल ॥ दोहरा ॥ त्वचादोष
जलठावकोकफसमीरपुनिहोइ ॥
पत्तीहारविहारतैविष्टाव्यापैसोइ ॥ ७
२ ॥ अथअंतरिक्षजल ॥ सोरठा ॥ ^

१ मूल आफारा होइ ॥ पवन होइ कफ को
करै । पानी सीतल सोइ ॥ लीजै चार रवां
धिकै ॥१३॥ अथ तडागोदक ॥ सोरठा ॥
वर्षा जल सम सोइ ॥ मीठा स्वाद कषाइ
भी । कफ समीर जल होइ ॥ अस्वनका
र्तिक अमृत जल ॥१४॥ अथ जल च्या
र प्रकार के वर्ननं ॥ दोहरा ॥ रोगोदक
इक पाप जल । असोदक अभिराम ॥
चौथा पुनि आरोग्य जल । कह्यौ भेद गु
न नाम ॥१५॥ अथ रोगोदक रूप गुण ॥
दोहरा ॥ लता रूप छाया गया वहु तरु
छुपुन कुंज ॥ कमल सिवाल पिछल वहु
त भिंन्न कूप पर छंन ॥१६॥ काला नीला
त सु जल बीच उडै पतझार ॥ दुरगंध मू
त्र सम गंध है ॥ रोगोदक कह्यौ विचार
१७ ॥ पापोदक रूप दोहरा । ग्राम निकट
विष्टा मिलत कृम कीट अति होइ ॥ मे
ला नीला सिवाल वहु ॥ पापोदक है सो

१

३॥७८॥ दोहरा ॥ अन्नानपानकीजैनही
सोवाचारुनदेहु। कह्यौ आत्रहारीतस्यों
जलपापीसुनिलेहु॥ ७९॥ अथ अश्रोद
कविधगुणकथनं॥ चौपई॥ प्रातक
लसनौतनलैआउ। वस्त्रछाणजल
धूपधराउ॥ सुधाकरनरातकौधरौ॥
प्रातहोइसकलपुनिभरौ। अश्रोदक
हैयाकोनाम। हारीतकह्योजलअम्
तसमान॥ सभहीरोगनिवारनकरै
सूलअफराह्निमेहरै॥ ८०॥ मोर
ठा॥ स्वासकासकफस्वेद। सीतलपा
चनसर्वज्वरनेत्ररोगकोभेद। कह्योग्रं
थहारीतमै॥ ८१॥ अथ आरोदक॥ चौ
पई॥ मिष्टकूपकोजललैआउ॥ कोरे
भाजनमेअवटाउ। रहैअंशआठवा
आई अमृतजलरोगीकोप्याई॥ चतु
र्थअंशअथवातूलेहु। तेरासंनत्रिदो
षरहेहु॥ ८२॥ दोहरा॥ [illegible]॥ एकडोर

८ औषधसभइ।जलताताइकवोर।हा
रेकैरवपंडसुतजीतपांचकीओर॥८
३॥दोहरा॥पहरएकसीतलपचैतसो
दकसुनसीत।गुणअनेकताकोकह्यो
घडीच्यारमैमीत॥८४॥दोहरा॥तसो
दकसमदोषहरि।पचैघडीपुनदोय॥
कह्योआत्रहारीतमेजीवनजीवैसो-
ई॥८५॥कवहूंसीतलअंम्रतजलक
वहूंविषसमहोइ॥एकरीतजलत-
प्तकी।जीवतपीवैसोई॥८६॥चौ०॥
पारहीनजलवातहरेहु॥पित्तकोपअ
र्धवटरेहु॥कफकोरहुतीनपरहीन
पाच्चनकरैहोइज्वरछीन॥८७॥अ-
थगोदुग्धगुण॥दोहरा॥वातपित्तक-
फमलहरनस्वासकासमतिसार॥
प्लीहपांडुपुनसूलहर।कामलरुधि
रविचार॥८८॥धातपुष्टपुनवलकर
८

न सुषदाइक अभिराम। वंद्व कोष्ट गोमू
त्र पुनि। छीर गऊ पुनि स्याम॥ ८९ अथ
छाग दुग्ध गुण॥ कषाइ मधुर सीतल सु
भग। पित्त समन ज्वर कास॥ अतीसार
स्रोणत हन ग्राही वाल विसाल॥ ९० त्रि
दोष हरन पुनि छुत हरन दुर्वल पुष्ट क
रे है॥ मथ्यनी मथ्य घईया करौ॥ धातपाक
कौ देइ॥ ९१॥ अजा स्वेत कफ कौ हरै वा
तकफा पुन पीत्त। अजा रक्त पुन स्वास
कर। कहै भेद सुनि मीत॥ ९२॥ सोरठा॥
गउ रूप्प इक रंग अजा किस्न समरोष
हर गुन फुनि वर्न संग॥ कह्यौ आत्रहा
रीतस्यौ॥ ९३॥ अथ महषी दुग्ध गुण॥
वल पुष्ट कफ कौ हरै॥ निद्रा तंद्रा होइ
पित्त समन औचीकना॥ महिषी पय
असमोइ॥ ९४॥ माहिष धारा अमृत सम
म॥ विष्म विष्म करपान॥ धातपुष्ट पुनि
वलकरन। इह विधि पीवसु जान॥ ९५॥

९ अथ उष्टीपयगुण ॥ दोहा ॥ अरसमूत्र
लकफवातहर ॥ रूषाउष्णकषाइरो
गहरे ॥ अमशोषपुनि उष्टीपयलय
पाइ ॥ ९६ ॥ अथ नारीपयगुण ॥ सा
जीवनबृंहनमूलफुनि संतपनि नेत्र
विकार ॥ पित्तसमनरू षाविमल ॥ ना
रीपयसुअपार ॥ ९७ ॥ अथ मेषीपय
गुण ॥ अमधररूषाविमल ॥ उ
ष्णवातहरै कफजाइ ॥ रक्तपित्तस
मदोषहरे मेषीपय इह भाइ ॥ ९८ ॥
अथ दूधपानइ [illegible] कौ श्रेष्ठ ॥ चौ० ॥
दुर्वलछीण अनिद्राहोइ ॥ जीर्नज्वरी
अमश्रमसोइ ॥ व्यायामस्वासअल्पपु
निरेत ॥ विषअगनदीपनकरदेत ॥ ९९ ॥
वीरपानइन्हकौ विमलधातकरनअ
भिराम ॥ जीवनजीवपुनिजगतकौ अ
द्भुतगंगाराम ॥ १०० ॥ अथ पयस्योंवि
९

हु॥ अल्पलवलंद्धमस्तपुनि॥
वल्लीफलआचार॥मत्समांसजा
मला॥बुरीकुलथीदूधविगार॥१०१॥
अथमठागोका॥दोहरा॥अरुचिपीन
सकासपुनि॥मूत्रकृछ्रकौदेहु॥सी
तमज्वरपुनिविषमज्वरग्रहणीना
सकरेहु गोरष अमृतसमा
न॥पुनवसनछुत्तिकेलेहु॥जाजीमि
रचालवणमिल॥तवहीपानकरेहु
॥१०३॥गोतक्र॥त्रिदोषसमनगोत
क्रपुनिज्वरपथ्यविचार॥दीपनपा
चनअरसदुषग्रहणीरोगनिवा
र॥१०४॥एकडोरअमृतसकल
तक्रपानइकवोर॥अतिउज्जलउ
वतीमथ्योदैदैप्रेमरुकोर॥१०५॥
तेजकरोगनिदानमैतक्रपानतै
जाहि॥अमृतपानवैकुंठमैभूम

नासकोविषे सुगंधदंदिना आवैपीनस

१० तक्रसमनाहि॥१०६॥ तक्रपानसम
अमृतपुनिदुर्लभदेवीदेव॥सोका
यौहीपाइये॥विनाकृष्णकीसेव॥१०७॥
अथमहषीतक्र॥दो०॥कफकिं
चितमहषीकरै॥हरैसोथमतिसा
र॥पलीहअरसग्रहणीहरै॥पुनि
बलकरैअपार॥१०८॥अथछाग
तक्र॥ छागतक्रलघुगुल्महवि
त्रिदोषसमनफुनिसूल॥ग्रहणी
अरसविकारपुनिपांडुरोगकोमू
ल॥१०९॥अथतक्रपानइन्हकोअ
वास्तनाहि॥चौ०॥दुर्वृत्तीरामूर्छा
भ्रमशोषहतऔत्रिषापित्तकोको
प॥इन्हकौतक्रपानहितनाहिलि
ख्योग्रंथअत्रकेमाहि॥११०॥अथ
गोघृतगुण॥दो०॥वायपित्तक

ण॥रूषादीपनउश्नपुनिक्रमदवुकोना
त्रा वातहरनतीक्ष्णमहा अस्चमूत्रगु
णग्रास १२२ अथउष्ट्रीमूत्रगुण॥
रूषाक्रमदक्रहरनहरयद्दुष्टकुष्टउन
मादउष्ट्रीमूत्रपुनितेसुनौ औषधम
महआदि॥१२३॥अथगरधवमूत्र॥
तलेजमोग्यमहाकुच्चित उनमादकुष्ट
हरिसोइ छारतिक्तकंडूवोसुन्यो षर
मूत्रअसहोइ १२४ अथमानुष्यमूत्र
गुण॥छारकटुकपुनिमधुरल
घुनेत्ररोगअभिराम नरमूत्रदीपनसु
भगकफहंतासिसकाम १२५ अथ
वृषभमूत्रगुण॥वृषभमूत्रक्रमक्रो
ष्टहरि कोमलग्रहणीसोइ अग्निदी
प्तपुनिपांडुहरि वृषभमूत्रअसहोइ
॥१२६॥अथमूत्रगुणभेद॥अजामूत्र

१२ गोमूत्रसमपानलेपकौ एकतैलपाक
कोमूत्रसमताकेभेदअनेक ॥१२७॥इ
तिश्रीपुरुषोत्तमआत्मगंगारामद्वारावि
विरचितायांभाषासंवंधेसारसंग्रहात्
जलविधिक्षीरादवर्गमूत्रगुणभेदद्वि
तीयसमुदेशः॥२॥ ॥अथइक्षुव
र्ग॥दोहरा॥रसाइनउत्तमवलकरन
स्वादअजीवनमूल रक्तपित्तपीनस
हरन संतर्पनअनकूल १२८ स्निग्ध
मिष्टपुनिअमृतसम देवलोकनहि
होइ ब्रंहनकरनपुनिकफहरन स्वे
तइक्षुपुनिसोइ १२९ इतिस्वेतइक्षा
पोडा॥ अथस्यामइक्षु॥किम्नइक्षुपु
निस्वेदसमु दाहहरनअभिराम ब्रं
हनकरनपुनक्षारगुण कहीइक्षुपु
निस्याम १३० अथजंत्रेणपीडतरस॥

गुरुसंतर्पनवल्लकरण विष्टंभरुधिर
कफकोपपित्तसोषश्रमहरनपुनिक
रदानअलोप १३१ रसकुअदयाते
कह्यो दांतनपीडतहोइ पेटभरैपुनि
आपरण वरासाइनहिकोइ १३२ अथ
शाकवर्ग॥ अथकरेलागुण॥ वातह
रनपुनिकफहरन उष्णपित्तकोकोप
करुवेअरुपुनिरुचिकरनकरेतुध
रकीतोप १३३ अथकटूरीया॥ वा
तहरनकफहरनपुनिपित्तविनाश
नसोइ विंवीअनुतरुचिकरन बुद्ध
नासकछूहोइ १३४ अथककोडेगु
ण॥ त्रिदोषसमनरोचकविमलपाच
कमधुरपवित्र ककेटीकफलज्वरह
नसदापित्तमुनिमित्र १३५ अथतोरी
यागुण॥ स्वादमधुररुचिकरनकोशा
तिकअभिराम त्रिदोषसमनपुनिज्व

१३ रहरन रूचिकरजेवहि स्याम १३६
अथपटोलसाकगुण॥ पटोलपित्त
कफपित्तहरन पुनिरोचकपरमपवि
त्र हारीतकह्यौज्वरहरनपुनि शाक
वर्गसुनिमित्र १३७ अथवंताकगुण॥
॥दो०॥ वंताकस्यामसुंदरसुभगशा
कविषमुअभिराम दृष्टकरनपुनछु
धाकरवठैसुक्रअतिकाम १३८ स्वास
कासपुनिपनिपवनहररोचकपावक
सोइ आमजुक्तअद्भुतमहाघृतपु
लितजैहोइ १३९ अथसूरणगुण॥
करशाकसूरणसुभगअसोसाकन
कोइ दीपनपाचनअरसदुष गुल्मह
रनपुनिसोइ १४० पलीहहरनपुनि
क्रिमहरन कंडुकुष्टनदेहु रक्तपित्त
निंदतमहा हारीतवचनसुनिलेहु १
४१ अथवास्तूकशाकगुण॥ पित्त

१३

करनकफवातहरि सेवकपाचकसोइ
सूलअफारासूमहरन अतिपवित्रपु
निसोइ १४२ उदरग्रहेताकोविमलघ
तसंगग्राहकजान साकविबैसदरस
भगवास्तूकनामवषान १४३ अथ
फलवर्ग:॥अथदाषछोटीगुण॥मदवी
औसीतलमहामधुरस्वादअभिराम
रक्तपित्तज्वरस्वासहरि स्निग्धदाषपुन
स्याम १४४ अथबडीदाषगुण॥त्रिषा
दाहसीतलसुभगद्रावकपरमपवित्र
अतीसारनिंदतमहा आमहरनसुनि
मित्र १४५ अथजामणगुण॥जंबूग्रा
हीमधुरपुनि कफहंताअभिराम बो
तहरनरोचनविमलजामणसुंदर
स्याम ४६ अथबिजोरीगुण॥मातलु
गकफलवातहरि क्रमसूलउदरवि
कार रक्तपित्तनिंदतमहापाचनसुन्यो

अपार १४१ अथनारंगीगुण॥रोकच
प्रयदीपनसुभगत्रिदोषशूलक्रमता
सभंदाग्नपुनिकासज्वरनारंगमधुर
विलास १४८ नालीयरगुण॥चौ०॥
नालकेरयैपानकरेहु रक्तपित्तकोको
पकरे गुरुस्निग्धअफराजार बलवर्ध
नअरुमधुसमभाउ १४९ दोहरा॥अ
तिसुपकविष्टंभपुनिकफकर्त्तातूजाण
बृंहनकरनदीपकसुभग देवपूज्यकौ
प्राण १५० अथछुहारेगुण॥त्रिदोष
समनसीतलसुभग याहीपरमपवि
त्र दुग्धक्वथितपुनबलकरनखर्जूरी
फलमित्र १५१ अथकपित्थगुण॥
मधुरकषायकपित्थपुनि क्रिमिरोगह
रनमतिसार ग्रहणीकंडुपुनिकामहदि
सीतलछर्दनिवार १५२ अथदाडिमा
ष्टकगुण॥सीतलपाचनत्रिषाहति

त्रिदोषसमनज्वरकाम रोचकग्राहीस्वा
दपुनिमधुरा ऊमअभिराम १५३ अ
थअन्नवर्ग॥ अथचावलगुण॥ रक्तशाल
कोविलविमल त्रिदोषसमनअभिराम
कछुग्राहीपुनिबलकरन सीतलबृष्टी
नाम १५४ अथगोधूमशीतलमधुपु
नित्रिषाहरि॥ कफपित्तनिवारनहोइ
कछुरूक्षीपुनिबलकरन अल्पमेदस
निसोइ १५५ अथचणागुण॥ शीतलवा
तलकफहरन पित्तसमानअभिराम
कछुरूक्षपुनिमलहरनचनाफुलेरी
कांम १५६ अथमूगगुण॥ कफहंता
पुनिसुषकछौमूगकीवात पुष्टकरन
कफमलहरनपथ्यदीयेज्वरजात १
५७ अथजवगुण॥ जवसीतलपुनक
फहरनपित्तसमनपुनिसोइ कछुग्रा
हीपुनधातकरपवित्रजगपुनिहोइ १
५८ अथपूरीयागुण॥ घृतपुरनपूरी

१५ सभगअतिसुपक्कअभिराम त्रिदोषस
मनबलकरन पुनस्वादकामकेकाम १
५९॥ अथमुहालीगुण॥ ब्रहनकरन
रोचकविमलवन्नकरनपुनिस्वाद स
नमठडीरुजर्ककादेवपूज्यतेआद १६०
॥ अथपूपका॥ गुरुवाततलफुनिकफ
करन रोचकपरमपवित्र पित्तसमन
अभिराम सुनिकहीपूपकामित्र १६१
अथमांडसठीगुण॥ सोरठा॥ तंदुलषष्टी
आणि लीजैमांडउन्नादिके मूत्रकृछ
कीहाणि रोचकतर्पनवातहर १६२
मूत्ररोधपरमेहपुनि महाअस्मरीजा
इ कह्यौआत्रहारीतमैइनकौमांडपि
वाइ १६३ अथपूलकाकणककी॥ गे
हूचूर्णपीसिकैषर्परपूलपकाइ रोच
कओमलकरनमधकफपित्तसिराइ
१६४ अथफेणी॥ बलकर्त्रीरोचकवि
मल फेणीअमृतसमान त्रिदोषहर

नपुनधातकरअतिप्रयगंगाराम १६५
॥अथवीरगुण॥गुरुविष्टंभपुनिकफ^
करनपित्तसमानअभिराम वलकर्त्ता
रोचकविमल अतिप्रयगंगाराम १६६
॥अथअष्टगुणकामांड॥चौ०॥त्रिकुटाध
णियासेंधलेहु हिंगुभ्रष्टुतेलमैदेहु स
मऔषधलेतऋमिलाइ सभैरोगछिन^
माहपराइ दीपनपाचनसूलअफराज्व
रअनेकनासैततकारा मंडअष्टगुणक^
ह्योविचार अतिपंडितलैचतुरसवार।
६७ अथजवकामंड॥जवनिस्तूकलै^
भूनिकेतिनकाकीजैमंड कंडरोगपु
निपित्तहरिकफकोकरैत्रिखंड १६८
रक्तपित्तअद्भुतमहापंडितलेहुसवारि
कह्योग्रंथशारिंगधरिदीजैमांडसंवा
रि १६९ अथलाजामंड॥लाजामंड^
ग्राहीमधुरवलवर्धनअतिहोइ पित्त
समनपुनिजरहरनकफकोगनसीतल

१६ १७० जेतेदिनज्वरतैमुकत तवहीपथ्य
विचार कह्योग्रंथसारिंगधरि दीजिये
मांडसवार १७१ अथपथ्यविचार॥प्र
थमजामदीजैनही जुगमजामवलछी
न दीजैपथ्यविचारिकै रोगीसदाअधी
न १७२ अथकलिंगमागधिपरिभाषा
॥अथतोलनप्रमाणकथितंसारंगधरि
मतात् जवद्वैरतीहैविमलच्यारिगुंज
कौवल्य आठगुंजमासाकह्यो सुण
हुतोलनकीगल्य॥१७३॥चौपई॥माष^
चारटांकतूजाणि षट्मांसेपुनिगद्य
वषाणि कर्षइकमासेदशहोय कर्ष
चारिपलजाणहुसोइ कुंडवईकपल
चारिवषाणि कुंडविचारप्रस्थकोजा
ण प्रस्थचारिआढकएकहोइ आढ
कचारिद्रोणीपुनिसोई माषआदि^
चतुर्गुणजाण सारिंगधरतैंकह्यो^
१६

वषाण १७४ ॥ अथयुक्तायुक्तवी
चारिकथितं ॥ दोहरा ॥ औषदनमित
ग्रंथमेक छौनक छवि विचारि भाजनक
छौनन अंगपुनि परमित कहीनन
पार १७५ सोरठा ॥ भेषजदेहु विचारि
जहांनमितसबलिजीये पंचांगले
हु विचारि भाजनमतमैचतुरसुनि १
७६ जहांनसंष्यातेलकीतेलतिलां
कोलेहु अयुक्तउक्तजिव्याधकी
युक्तउक्तहदेहु १७७ सोरठा ॥ व
षगितगुणहीन औषधिकीसीनकां
मकी पुनचूर्णगुणहीन मासदोइवी
तेत्तिसैं ॥ १७८ ॥ दोहरा ॥ वर्षएकगुण
तेरहतपाकसभैसुनिमित्र आसव
धातएअमृतसमभलेपुरा तननित्त ॥
१७९ ॥ दोहरा ॥ गुटिकासंवतइकगुन
अवलेहवर्षगुणहीन घृततेलगुण

८ तेरहत चतुर्मासपुनिहीन १८० अथ
मधुच्यारिप्रकारकेकथ्यते॥भ्रामरपै
त्तकछौद्र पुनि माछ्रकअतिअभिरा
म १८१ अथच्यारोमधुवर्नकथ्यते॥
चौपई॥भ्रामरस्वेतसुअतिअभिराम
पैत्तकघृतसमकह्यौवषानि माह्
कतैलवर्नसमहोइ छौद्रकपिकपि
त्तवर्नअतिसोइ १८२ अथभ्राम
रमधुगुण॥शीतलमधुरकषाइअ
तिघातकरनअभिराम व्रणारोपण
सोधनविमल रक्तपित्तकैकाम १८३
त्रिदोषसमनपुनवलकरन कृमिरो
गहरनज्वरनास छर्दत्रिषापुनिभ्रम
हरन ग्रहणीपीनसकाम १८४ मेह
मोहअतिसारपुनि औवषीदुषजाइ
नेत्रामैमूर्छामिहा भ्रामरमधुसमजा
इ १८५ अथपैत्तकमधुगुण॥पैत्त

कमधलपुतुहहै कामलहरितुतका
स सीतलअरसविकारदुषश्रेष्ठ चैतके
मास १८६ छौडकमधगुण॥ छौड
कअतिशीतलनही दीपनसमताभा
इ अतीसारहतदाहपुनितिहकोरीया
नजार १८७ अथमात्कमधगुण॥ मा
तुकमध पुनिछौड सम मातुककछु
वसेष समभैस्वासपुनिगुल्महरिवातअ
धिकहरिलेत १८८ बृहनकरनरूषा
विमलश्रेष्ठकबातविलास ग्राहीलघु
सुररसुभग अंजननेत्रप्रकास १८९
तमा इतिश्रीपुरुषोत्मजगंगारामविरचितायां
भाषासंबंधेसारसंग्रहात् रत्नवर्गकंदशा
कवर्गफलवर्गपथ्यविचारजुक्तआयु
क्तःविचारमधुवर्गवर्ननंनामत्रितीयस
मुद्देशः॥३॥ अथज्वरनिदानलिष्यते॥
दक्षप्रजापतिराजइक अन्वितदुहिता

१८ पुत्र जड्डग्ररंभ्योयेकदिन कह्योवात॥ मुनिमित्र १८० ब्रह्मादिकन्यौंतेसकल ग्रोरकुटंवसोराज हसिभाष्योरानीसु नहु महादेवनहिकाज १८१ विवाहच हेसभदेवता चले जाततिहजगपहै वेशिवकीभामिनी सुनहुकंतहितल॥ गए १८२ कहाजातएदेवताव्यासादिक हैसोइ सुनहुपियारीभामिनी जगपि तातवहोइ १८३ चलोहुकंतजौजगप है पितासदनहमजाहि सुनिसुंदरसा॥ चीकहीहमतौन्योंतेनाहि १८४ ग्राज्ञा भंगकरीत्रियाचलीजोररेथसाज ग्र नुचरजुगग्रागेकियेगईपिताघरमाज १८५ करजोरेसभदेवतादेषसती॥ को ग्रोर उठ्योनकोउमातपितवै ठनदईनवोर १८६ तवहरिमानीसुं दरी पडीकुंडमेझांप स्वासालियोशिव

कोपकै उपजिपरत्योतिहताप १९७

अथज्वरकीमूर्त्ति॥ तीनसीसतीन्यौचरन षट्भुजानवनैन अधपत्तियाकौनामुहैसंगरोगकीसैन १९८ अथज्वरवा[illegible]स्लक॥ मिथ्याहारविहारतेदिनसोवैजागेरात अथवामलकेकोपते उपजिपरतिहैताप १९९ अथज्वरकौकोप॥ स्वासकासहिक्कात्रिषापर्वभेदपुनिसोइ अतीसारमूर्छातृष्याविष्टंभछुर्दिअतिहोइ २०० येतछीनज्वरकोपके माधवके यौनिरान कारनवहुतअनेकहै ज्ञानतवैद्यसुजान २०१ अथज्वरकेसुभलछिनकथितं॥ दोषअग्निपुनिधातवल च्यारेसमताभाइ आत्मानप्रसन्नपुनिइंद्रीयप्रसन्नहोइजाई २०२ तेतछिनजिमतापके अतिप्रसन्न

ताहोइ औषधकरौविचारिकै रोगीनीका
होइ २०३ अथज्वरकीसमिता॥ जवल-
गसिरुभारीरहै तवलगज्वरनहिजाइ
सिरुहलुकाजवजाणीयोज्वरल्लेगया
वलाइ २०४ अथरोगहूडुजाणीये॥
नित्तोधमूत्रपुरीषते दिनसोवैजागैरात॥
विषमासनजलत्रिषा रोगवठैइहभांत
२०५ अथसप्तधातकथितंसारंगधर-
मतात॥ रसरक्तपुनि मांसते मेदमज्जा
पुनिसोइ अस्थशुक्रयेरेह त्वग सप्त-
धातरहसोई॥२०६॥ अथमलस्थान॥
जिह्वानेत्रकपोलपुनि विष्टाईडीजा-
णि कर्नदंतपुनिनासिका कछकपोल
वषाणि २०७ नषपिंडका द्वादसभये
सप्तधातहैअंग तिनमैतीनप्रधानहै
रहतजीवकैसंग २०८ रूधरएकविष्टा
अगमसुक्रतीसरोजाणि तीनगएक-
छुनारहै होतदेहकीहाणि २०९ धा

लपरलाप पाकै कं० अधरतनताप स्वे
द दाह अधकज्वर गहै ववनत्रिषाभ्रम
जिमकोरहै मैनम्रूत्रविष्टापुनिपीत ल
छनसुनोपित्तज्वरमीत येसभकहहा
रीतवषान पंडितकरोसकलपरमान
२२१ वेगहोरमतिसार पुनिओनिद्रा
कोनाश मुषकटुतामूर्छात्रिषाडाकहो
इपुनिजास २२२ कं० अधरनात्रापकै
प्रलापदाहमतिसोइ त्वचानेत्रपीलेर
है ज्वरापित्तभ्रमसोइ २२३ अथकफ
ज्वरलछन॥ वेगअमितआलसमहा
मुषमीगाउकलेद रोमहर्षनिद्राताकहै
स्लेष्मभेद २२४ हाथ्यपावभारीरहैत्रि
प्तशीतकोदेत नांकवहै षासी अरुचिवि
छामलत्रपुनस्वेत २२५ चौ० आलसतं
द्राषासीस्वास उष्मपीतभूषकोनास रो
मरहर्षअतिनिद्राहोइ कडछर्दमधुरमुष

२१ सोइ बेहरषांसीमंद ज्वरजाहि नेनमुस्वे
तेहैजोजाहि भारीअंगनीरमुषवहै क
फज्वरलछनेअश्रुअतकहै २२६ अथज्व
रकीछिद्राद्वंदजभेद अथवातपित्तज्वर
लछन॥वातपित्तज्वरकोपत्तेत्रिषामूर्छा
अतिहोइ कंठसोषकंपैवहुत अतिनि
द्रापुनिसोइ॥२२७॥चौ०॥रोमहर्षसिरूभा
रीजानि पर्वभेदहूमकह्यौवषानि जंभ्र
दाहभ्रमजाकोरहै वातपित्तज्वरमाधव
कहै २२८ अथवातश्लेष्मज्वरलछन॥
॥चौपई॥पर्वभेदसुनिभारी होइनाकुवहै
कासुपुनिसोइ प्रस्वेदकिणाछुभूषकोना
स अतिनिद्राआलसपुनितासु २२९
भारीअंगपुनिसंषदुषनेनपरैनहिचैन
कफसमीरज्वरएकघरनिशानआवैसे
न २३० अथश्लेष्मपित्तज्वरलछन॥क
रैदाहसीतलकभीपांडुमेहअपार कासअ
रुचित्रियअधिकताश्लेष्मपित्तविचार

॥२३१॥ अथत्रिदोषज्वरलछन॥ संन्नपात त्रिदोषफुन लछनकहे विचारि अलसंध दूषैसकल दाहसीतइकसार २३२ सिर भारीपुनिकंठकफ नेत्रलालुअतिहोइ तंद्रामोहसंज्ञानही कांनसुनैनहीसोइ २३३ अनर्थवचनजिह्वाफुरतस्वास कासपुनिजाणि गीतनिर्त्तवोलैविकल संन्नत्रिदोषवषाणि २३४ अथज्वरकी सि[illegible]हा॥ चौपई॥ ज्वरकेआदिक्रिया हैयेहु वाररापिपुनिलंघनदेहु तप्तनी रवहुतगुणकरै उदरसुद्धदोषसभहरै ॥२३५॥ सप्तदिवसतरुनज्वरहोइ दसवासर सि[illegible]मितहैसोइ तेरहदिवसपुरातनजा णि औषधकरूपरदोषपिछाणि २३ ६॥ दोहरा॥ ज्वरकीपरमितपत्तहै क ह्योग्रंथमतिसोइ यातेऊरधजोरहै मंदवेगफुनिहोइ ताकोकहीएविषम

ज्वर १

करैदेहसंताप रोगहद्दिनदिनकरैजा
णिकर्मकोपाप २३७ जवलगुज्वरकीअ
सह तवलगुजोतुनुन्हाइ तवहीउपजत
विषमता कह्योग्रंथसमझाइ २३८ वा
सीजलपीवैनही करैनहीव्यायाम आ
कालदिवससोवैनही मैथुनकरैनभाम
२३९ भोजनकरैनचीकना तवलगु
वलनहीहोई एलछनानिंदतमहा सु
नोगुनीसभकोइ २४० अथरसगत
ज्वरलछनं भारीतनछातीदुखै सदनछ
र्दकीचाह अरुचिकसिरभारीरहै वेग
होतहैजाह २४१ अथरक्तगतज्वरल
छन॥ अंगदाहथूकेरुधर छर्दमोहप
रलाप पिडकाज्वरकृस्नमहा कह्यो
रक्तगतताप॥२४२॥ अथमांसगतज्व
रलछन॥ दुष्टभावपिडकावहुत श्रो
णितमूत्रपुरीष उषमातमतृस्नामहा

सुणौमांसज्वरमीत २४३ अथस्वेदगत
ज्वरलछन॥ तीव्रवेगमूर्छामहाविपा
साछर्दगलानि अनर्थवचनदुर्गंधता
ज्वरामेदगतजान २४४ अथमज्जागत
ज्वरलछन॥ चौ०॥ हिक्काकासस्वासपु
निसोइ बोलेतमप्रबोधनहिहोइ अंत
रदाहवाहरिपुनिसीत मर्म भेदमज्जा
गमीत २४५ अथअस्थगतज्वरलछन॥
चौपई॥ विछेकसर्वगात्रनूजाति अ
स्थभेदहमकहौंवषाण विरेचस्वाजा
दिनतैहोइ अस्थतगतज्वरजाणहुसो
इ २४६ अथधातज्वरलछन॥ दात
दगधदिनरकरैदुर्वलकरैसरीरसोष
स्वासअतीसारपुनिप्रानतजैइहपीर
२४७ अथज्वरच्यारवर्नको॥ ब्रहमनछ
त्रीवैश्यजुर सूद्रतापहैसोइ॥ स्वरूपरं
गतिन्हकेकहौ जैसेममतिहोइ २४८

२३ ॥ अथ ब्रह्मज्वर को रूप ॥ चौ० ॥ स्वरगति

प्रभाभाजेसहोय मानोअगनसिषासम

सोइ जग्योपवीतकंठ मयसोहै ब्रह्म

न ज्वरतन कुटीकरमोहै २४८ अथ

छत्रीज्वरकोरूप ॥ ताम्रमूलकोकुसम

जिस ज्वरछत्रीकी देह हाथषड्गजोधा

महारोद्रदाउपुनियेह २४९ अथवैश्य

ज्वरकोरूप ॥ चौ० ॥ पंचप्रभाआमाजस

होइ मानोअग्निसिषासमहोइ निर

षतमनमकरध्वमोहै २५० अथशूद्र

ज्वर को रूप ॥ तीतवेगरुधोवहुत

मूत्रकिसकाभास त्रिषामोहअपपवि

त्रा रूइतापकीआस २५१ भोजनक

रैनघृत विना विषमहोइ पुनिजासु

दुर्वलकरैसरीरको होइस्वासपुनि

जासु २५२ अथ ज्वरविमुक्तलछन ॥

मुषपाकैछीकैविमलपुनिचक्रनअ

भिराम ब्यगतरोगकेदिनसभागत २३

ज्वरगंगाराम २५३ भूषत्नगैवोलैसु भ
ग लघुश्राबैपरस्वेद सिरकंडूलघुचरन
कर सुनहुविगतज्वरभेद २५४ अथ
संनिपातनिदानकथितं॥ आलसचिक
नमद्यतेतीछणकटुवाषाई स्त्रीसेवपु
नमधकरतेफिरैधूपश्रधिकाइ २५५ चिं
ताक्रोधव्यायामतेरूषासीतलषाइ व
संतभादपदनभविभैसंनपातक्हेजाइ २
५६ अथसन्नपातत्रयोदश॥ संधक
अंतकसंनपुनि रुग्दाहचित्तभ्रमसोइ
सीतांगतंद्रकबुधजन सुनोकर्नकु
ब्जभीहोय २५७ कर्नकपुनिविष्यातहै
भग्ननेत्रनजाण रक्तष्टीवप्रलापपुनि
जिह्वककह्योवषाण २५८ अभिन्या
सत्रियोदसभयेसभैघोरकेरूप भिंनर
संष्याकह्योसुनोकांनदैभूष २५९ अ
थसंष्या॥ सप्तवर्षसंधकरहै अंतकद
शदिनजाण तुग्दाहविसबुधजनसुनोव

२४ षीतीनपरवान २६० एकपछमीतांगापुनिपं
जीतंइकज्जाए कंटकुकुज्जैदसतीनदि ज्ञ
नपुनसभकहोवषाए २६१ [illegible] मा
सतीनकर्नकरहैभग्ननेत्रदिनआठ रक्त
ष्टीवदिनदशरहै बुधजनवोधैंगाठ २
६२ प्रलापचतुर्दशदिनरहै षोडसजिह
कजाए अर्धमासिभिन्यासहै परमतक
कहीवषाणि २६३ अथसंधकसंन्न
नछन॥चौ०॥पूर्वश्लस्यपलेआवै
संधकवहुरिसोअउपजावै तापेरहैसा
धकोकरै वलकीहानिनीदभीहरै हा
डुपावफूटैदिनरैन कांपिउटैसुधरहैन
चैन संधकसंनसुनकहोसुभाइ संन
पातकलिकातेपाई २६४ अथअंत
क॥चौपई॥ अंतकदाहतप्रअतिअंग
अमितवाइकेउठततरंग रुदनकरैसि
रकांपैभारी मूर्छाहिकानजाइसभारी
॥२६५॥ अथरुग्दाह॥चौ०॥रुग्दाहद २४

गधमूर्छी॥ अतिभारी अनर्थवचनदेतमु
षगारी कंठमध्यकफमूलआफेरा
स्वासस्वल्पनहिजाइसभारा हनुस्तंभ
त्रिषाअतिभारी कष्टसाध्यहमेकहोै
विचारी सन्नपातकलिकामैलिषै तल
छनवैद्यगतेलिषै २६६ अथचित्तभ्र
म॥दोहरा॥ प्रथमतापपुनिचित्तभ्रम
तश्रमोहवैकल्य नेत्रविकटमदअरु
नताजाणचित्तभ्रमजाल्य २६७ करै
निर्लज्जवोलेवुरा हसैहसावैसोइ गाइन
विषैप्रवीनअति कष्टसाध्यअतिहोइ
॥२६८॥ अथशीतांग॥चौ०॥ सीतांग
सन्नपातहैसोय हिमसरीरनवसिष
तेहोइ हिक्कास्वासकांपैअतिनारी सि
थलअंगाकछूनाहिसंभारी वोलेतु
छछुईपुनकरै पेटचलैतवहीउहम
नै उपज्योशोषनजाइसभारी ओषद

२५ कह्योनग्रंथविचारी २६९ अथतंद्रक
॥चौपई॥तंद्रकतंद्राज्वरकौधरै कफजि
ह्वास्यामपुनकरै पिपासाअतीसारपु
नहोइ चक्षुविषैदेषैनहिकोइ रसनेंक
दुकस्वासउपजावै पंचवीसदिनदो
षलगावै कष्टसाधकछूकह्योनजाइ
कुवरअस्वनीदियोवताइ २७० अथ
कंटक॥सिरभारीपुनिकंठकफमोह
छर्दअतिदाह वायप्रवलज्वरकोप
हु अनर्थवचनमुताह २७१ दुषस्तंभ
हा मूर्छामकष्टसाधपुनिसोइ संन्यपात
सभहीवुरे भलोकर्मतेहोइ २७२ अ बो
थकर्नक॥वुद्धनासपुनिकंठकफ
अंगविथापरलाप कर्नग्रंथपुनिमू
लअति स्वासकासपुनिताप २७३
॥अथनेत्रभाग॥चौ०॥स्वासकासवु

छिकोनाञ्ज सुनस्लैप्रानतजततपुनिश्वास
करैउपाइलगैनहिकोइ सूकैजीभश्रग
फुनिहोइ २७४ सोरठा॥ आठदिवसप
रमान भग्ननेत्रकीसन्निके रूपाकैरभग
वान तवहीउपाइकह्यू २७५ अथरक्त
ष्टीव॥ चौ०॥ त्रिवाम्लअतिसूलअ
फारा ज्वरहिकाभ्रमुरहत्तअपारा पूकै
रूपरस्वासअधमान संज्ञानासतजेपुन
प्रान जिह्वास्यामरक्तपुनिहोई दसवा
सरपुरमितहै सोसंनपातकलिकामे
लिषे गंगारामअस्वनतेसिषे २७६ अ
थप्रलापक॥ अनर्थवचनकांपैवहुते
अंगपीरपुनिदाह संज्ञानासपुनिअति
विकलकष्टसाध्यहैताह। २७७ अ
थजिह्वक॥ चौ०॥ स्वासकासतिह्वक
तेहोइ ज्वरअरुवधिरमूकहैसोइ रस

करे

२६ नाकंठकमलकीहानि उपजैजलनदी
कीहानी २७८ अथभिंन्नअभिन्यासा॥
॥दो०॥निद्रानासवैकल्यता वुधिनासअ
धिमान स्वासहोइमुखस्यीकणरोगीम
तकसमान २७९ इतिसंनपातत्रियोदस
संपूर्ण॥ इतिश्रीपुरुषोत्तमआत्मजगंगा
रामब्राह्मणविरचितायांसारसंग्रहभा
षासंवंधेज्वरनिदानज्वरमुक्तज्वरकेच्या
रवर्गत्रियोदशसंनपातज्वरत्रिदोषवर्ननं
नामचतुर्थसमुद्देशः॥४॥ ॥अथवीर्ज
कावास्तव॥सोरठा॥जैसेतिलमैतेल
पुहुपमध्यजौंवासनारस गारेकौमेल।
तैसैवीर्जदेहमै २८० दोहरा॥मैथुन
समैसुयानमनुकांपैसगरीदेहरोमरो
ममैरमिरह्यौ भेदसमझियेयह २८१
॥अथकाथलिष्यते॥काथकरनकी
विधि॥दो०॥षोडसगेरनमैकूपजलऔ

षधलैपै[illegible]कंकोरेभाजनपाइकैलेचू
ल्हेपरिटेक २८२ दोहरा आंचकदीजे
मिष्टकुंवरहैआठवांअस अनुपानस्यों
दीजिये पीवतहोइरहंस ॥८३॥ अथवा
तज्वरकोक्काथ ॥ मोथधवांसासोंठिपु
नि चौथीलेहुगिलोइ काढाकरिकैदी
जियै नासअनैलज्वरहोइ २८४ अथ
वातज्वरेगडूच्यांक्काथ ॥ सोरठा ॥ अस दि
तपीपलमूलेसतवासूंठिपहाडकी
एतीनोसमतूल पाचनहरतावातज्वर
॥२८५॥ अथशालपर्नादिवातज्वरे ॥ शा
लपर्नपुनसारिवा दृगवालादाषगिलो
य काढाकरिकैदीजियेसुषसंन्नपुनहो प
सो. इ २८६ तीव्रवातज्वरजाइहैकाढासा
विंगधरिकह्योअथसमझाय मारुतज्व
रअद्भुतमहा २८७ अथकासमर्जाद

 वातज्वरे॥ कास्मीरपुनिसारिवा त्राह मानसुगलोय हरड़ैदाषमिलाइकै गु उसोदीजे सो॥ २८८ हरेवातज्वरकी विथ्याकाढाकरिकैदेहु हैकाढाहारीतने मे महाविज्ञमुनिलेहु २८९ अथपि त्तज्वरकोक्काथ॥ कटुकीमोथचिराय ता नेहधवासाजान पित्तपापड़ाक्का थकरि होइ पित्तज्वरहानि २९० अ थकटुफलादिपित्तज्वरे॥ चोपई॥ कटु फलमुथाकटुकीआंन निंबछालइंद्र जवजान दसवैदिनपाचनकोदेहु ती व्रपित्तज्वरकोपहरेहु २९१ अथप र्पटादीपित्तज्वरे॥ पित्तपापडाकडूप्र यंगु भूनिंबवांसेकेसंग धवांसानो तनलेयआव काढाकरिमिश्रीस्योंप्या वूपित्तज्वरआछुगनोदेहु धाततापदु

निश्चैबाष्हरेहु पर्पटाहिहरयाकोनाम सा
रिंगधरतैकह्योवषानि २६३ अथदा
हादपित्तज्वरे॥सोरठा॥दाषक●डकू
तमालपित्तपापडाद्रिवाघुनि मुस्थाले
हुसंभाल काठाकरिकैदीजियै त्रिटमू
छीपुनदाह पित्ताअगभेदीसही काठा
करउतमाहपीवतभाजैपित्तज्वर २६४
अथकफज्वरकोबासकादिकाथ वांसा
मोथासोंठलैगिलोईधवासावीनक्काथ
जुकरिकैदीजियेकफज्वरहैहैछीन
२६५ अथद्राक्षादिश्लेषमज्वरे चौ० दा
षमनषाहरडैआन मोथापित्तपापडा
जान किनिवारकटुकीपुनिलेहु कफ
ज्वरकोकाढाकरिदेहु २६६ प्रलाप
मूर्छादाहपुनित्रिषाभ्रमपुनिहोइ द्रा
क्षादिकाढाविमलमिटैपित्तकफदोइ
२६७ अथमुस्तादिकफज्वरे सोरठा १
मोथाकटुपटोलत्राहमानजुचिराइ

ता तैंसोंबधसमतोलपित्तश्लेष्मज्वर
हरे भूषहोइपाचनविमल काठाकरहु
सुजान कह्योग्रंथमतजोगसत वुधज
नकरहुप्रमान २९९ अथगडूच्यादिक
फपित्तज्वरे॥गडूचीधनीयारिष्टपुनर
तचंदनपरमाष त्रिष्नादाहपुनिसर्वज्व
र कह्योग्रंथकीसाष ३०० अथप्र
क्षादित्रिदोषज्वरे॥सोरठा॥प्रक्षपुहक
रमूल लीजैसौंठिगिलोइपुन एव्यास्यौं
समतूल काठाकरिकेदीजीए ३०१ दो
हरा॥स्वासकासत्रिदोषज्वरपुनवषी
दुषजाइभूषहोइवुधजनसुनोप्रभक्षु
क्षादिपियाइ ३०२ अथकफवातज्व
र॥सोरठा॥गिलोइपपरीमूलसमतुवा
सौंठपहाडकी एतीनूसमतूल पांच
नवातश्लेषज्वर ३०३ अथभूनिंवा
दि॥चौ०॥भूनिंव निंवकचूरलेह सो
वमतावरपीपरदेह ढहतीयेकगि

लोइमिलाइ काठाकरदिनतीनुपिवाइ ॥३०४॥ अथपटोलादिकफज्वरेव्याप्र गधरामत॥सोरठा॥पटोलगिलोइक चूर वांसाहरडैपीपरै नोतननत्रिफलापूर दीजैकफज्वरमहतस्यो ३०५ अथपंचभद्रवातपित्तज्वरे॥चौ०॥पित्तपापडासोंठगिलोरु भूनिवामुथापुनसोइ भद्रपंच काठाकौनाम वातपित्तज्वरकोअभिराम ३०६ अथआरग्वधादिपित्तज्वरे॥कानीयारलमुंथाकडू हरडैपीपलमूल आधमानकफवातेज्वर आमज्वरअरुसूल ३०७ अथअमृताष्टकपित्तज्वरेश्लेष्मज्वरेदिव्यं॥गिलोइनीवमोथाकडू सोंठिइंद्रजवलेहु चंदनरक्तपटोलपुनि अमृतअष्टगतोहु ३०८ हिक्कादाहत्रिषाछरद मधपीपरसोदेहु श्लेष्मपित्तज्वरकोहरै रोचकपाचकयेहु १० अथकंटकादिस

अंवलतास

२६ वैज्वरेशारंगधरमतात॥चौ०॥ हरती
युगधणीयालेश्राउ सौंठदेवदारू लेपा
उ इन्ह श्रौषधकाठाकरहु जेतेज्वरपा
तेसभइरहु ॥ श्रथभूनिंवादिसर्वत्रि
दोषज्वरे॥चौपई॥ नैपालीचिरायता
श्रान देवदारूदश्रामूलहिठांन मोथा
कडूइंद्रजवलेहु धणीयासौंठगजक
णादेहु इनश्रौषधकाकाठाकरेहु भू
निंवादिनामतिह धरहु संन्नपाततेरह
नरहाह तंद्राश्रनर्थवचनमिटजाह
॥ स्वासकासज्वरकोहरैकाढाभूनिं
वाद कह्योग्रंथसारिंगधरदेह श्रास्त्र
मर्जाद १२ श्रथपिप्पलादिमहाकषा
यधन्वंतरमतात्॥पिपलीचीत्रासौं
ठवच चवकपीपरीमूल जीरापाठ
पतीसपुनि श्रजमोदासमतूल १३
किरायताकडूपुनिरेणु कारोहसघो
२६

सुमिलाइ भाडंगीपुनिकायफलमिर
चमूर्वापाइ १३ पीरीरसस्यौंइंद्रपुह्क
रमूलविडंग ककडासीगीअर्कजड ॥
गजकेसरकेसंग १४ अजवायनसों
नाकपुनि चतुरधवासालेहु त्रुधमही
गमिलाइकै पूरेतीसगलेहु १५ वातपि
त्तकफहरनेज्वरेरसभैसन्नके भेद सो
महर्षअतिनिद्रका सीतगातपरस्वेद
१६ देहसूल्पताकटुवचन सभैवातप
रस्तजेतेज्वरतेतेरहै गंधर्वजछअरु
मूत ७ अथरजन्यादिमहाकषाधन्वं यः
तरमतात् ॥ रजनीमोथ्यचिरायता त्रि
फलासोंठिगिलोइ नींवछालओपी
पेरै पुहकरमूलमीसोइ १८ वील्वज
वाइनबरहटी हरडैअरुकुम्हेर भाडं
गीअरु इंद्रजव पुनिरोउकटेर १९ रोह
सधलीयाकाइफललीजै कछूपरो

३० लडुगरगएकतेरासना देवदारूलैतोल॥
२०॥ नौतनलेहुदुरालभाको कडासी
गीआनि ऐओषधछुवीसहै काठाकर
हुसुजान २१ सौंठमिरचओपीपरैअ
नुपानस्योंदेहु कह्योधन्वंतरवाघभट॥
ज्वरत्रिदोषहरेहु २२ चौपई॥ घोरसं
नतेरानरहाहि दिनकरउदैअधम
मिटजाहि वमनप्रस्वेदप्रलापमिटाहि
तंद्रामोहश्रीतांगसभजाइ २३ त्रिषा
स्वासओकासदुषक्षिदैपीरपुनिदाह॥
कर्णसून्यजिह्वाफुटतकंठवुधउतसा
ह २४ कुष्टकष्टविष्टंभपुनि सुनिऐते
दुषजाहि यातेउपरसंन्नकोओरूओ
षधीनाहि २५ अथहद्ध्रहस्तासंन्न
पातज्वरको॥ चौपई॥ लघुदीर्घहहती
लैआउ कडूपटोलकचूरमिलाइ
कुडाधवासावांसालेहु पुहकरमूल

भतुंगीरेहु इन औषधकाकाढाकरहु
इहत्यादिनामतिहधरहु २२६ सन्नि
पातज्वरकौंहरै सभैउपद्रवकास पा
चनतंद्राशूलकफहरैसीतज्वरना
स २७ अथदसमूलनप्रसूताकौ॥वि
ल्वछालनहहतीयुगल परनीजुगल
कुंभेर पाडलनअरणीभंषडेपुनदोजू
कटेर २८ यहकाढादसमूलसुनि
मघपीपरअनुपान सन्निपातप्रसूत
दुषज्वरत्रिदोषअधमांन २९ साषी
सीतप्रस्वेदभ्रमकासस्वासहिदपीर
तंद्रकमस्तकसूलपुनि पीवतजाइ
समीर २३० अथअभयादित्रिदोष
ज्वरे॥चौपई॥अभयाधणीयामोथ
गिलोय उसीरइंद्रजववासासोइ
रतनैचंदनपदमाषमिलाइ पाठसौंठ
कनीयालनुपाइ कडुसमेतत्रियोदश
सजाण काढादीजैदोषपछाण ह

३१ रडैआदिपीपरसौंदेह तेराहसंन्नत्रिदोष-
हरेहु पिपसादाहकोसज्वरजाइ प्रला
पस्वासतेझ्ञनरहाइ दीपनपाचनभूष
लगावै वारवारवुधजनसमझावै ३
१ अथनिरग्धजीर्नज्वरे॥सोरठा॥हूझ
सौंठगिलोइ मघपीपरअतिवासपुनि स्वा
सकासपुनिसोइ जीर्नज्वरपीनसहरै ३
२ अथहूझादिसीतज्वरे॥चौ०॥छुईध
णीयांसौंठगिलोइ रतचंदनमोथ्याले
सोइ कडुकिरायतकटोलमिलाइ नी
वछालपदमाष[illegible]रलाइ पुहकरमूल
इंद्रजवलेहु भाडंगीपित्नपापडादेहु स
र्वसीतज्वररहैसुजान काठादेदिनसप्त
प्रमान ३३ अथमुस्तादिविषमज्वरे॥
मोथ्यासूंठिगिलोइपुनधात्रीछुद्रालेहु
काठामागधसहतस्यांविषमज्वररहे हु
दि ॥३४॥अथराष्नापंचकवातज्वरे॥सोर न
ठा॥राष्नासौंठिगिलोइ देवदारुपुन

अरंडजड काढापंचसोइ हरैवातज्वर
धातगत ३५ अथरास्नासप्तदुगण
एंगुतेरासना औरू भषडेलेहु देवदारु
गिलोइपुनि यामैडठसठदेहु ३६ पी
डासर्वशरीरकी पुनदूहीदुषजाइ का
ढासप्तकरासनादीजैसोठमिलाइ ३७
पारसदुषपुनिजंघदुष आमवातप
रस्वेद आकडमोलेकौंहरै सभैवाइके
भेद ३८ अथरासनादि॥चो०॥रास्ना
त्रिगुणएकतैलेहु अरडमूलवासापु
निदेहु मोथासोंठपतीसहिआन देव
दारूबरहटीजाण कचूनधवासाअभ
यालेहु कनीयालछालभंबडेदेहु ध
णीयासौंफगिलोइ अश्वगंधगजपी
परपाइ ३९ सतावरचवकपुननवा
पुनिवांसालेपीस वचहहतीजुगआ
निकैकाढाकीजेमीत ३४० जोगरा

अस्मोंदीजिये केगूगलआभादकेय
हदीजेसोंठस्यो अथवाअजमोदाद ४१
॥सोरठा॥सभैवाइकेभेद मज्जापीडासं
धकीग्रात्रकंपकेषेद अद्भुतषष्ठाधा
तको ४२ कुडावमेहूपुतनापवात
अर्दितपुछघाताहि जानुजंघओग्रघ
सीवातरक्तपुनिताहि ४३ ऊरुस्त
भपुनिछर्दद्दुष विसुचीपुनिसिरुरोग
श्लीपदइ्रीसक्रदुषजोनरोगसभरोग
४४ महाराश्नाक्वाथ्यसुनि वंध्यागर्भक
रेण ववेसीओषधमानपुनि ऐंतेरोगह
रेण ४५ अथमहाराश्ना॥अथनाग
रादक्वाथ्यज्वरातीसारे॥सोरठा॥ना
गरकुडापतीसमोथ्यगिलोइकिरातपु
नि एओषधलैपीसकाठाकरिकेदीजि
ये ४५ ओषधएकसमान दीपनपांच
नआमदुष अभैशूलअधमान अद्भु
तज्वरमतीसारको ४६ अथधानपंच

२

क॥ चौपई॥ धनीयामोथामौंमगाइ
लोचनवालाविलकपुपाइ आमशूल
ग्रहनीअहमांन ह्वानापचकअतिअ
भिराम ४७ अथधन्यादपाचना॥दो०
॥धन्यसौंठपुनिअरडजडएतीनोसम
भाग दीपनपाचनसूलसम औरूउ
दरकीव्याध ४८ अथसवस्तकाथ्वा
थओलातअतीसारे॥चौपई॥ कुडापत्ती
समोथालेआउ विलकथ्यलोचनवाला
पाउ ओलातअतीसारकोदेहु मोठसू
लपुनआमहरेहु ४९ अथकुष्टजाष्ट
कक्काथ॥आम अतीसारे इंद्रवीज
धावैविमल लोदमोथकेसंग दाडिम
पाठपतीसपुन नेत्रवालभीअंग ५०
काठादीजैसहतसौं अतिसुंदरअभिरा
म अथवारीजैमोचरस सुभदिनपह
लैजाम ५१ सोरठा॥अतीसारपुन
दाह अद्भुतओलातसूलकोकाठा

३३ करि उत्साह प्रचर्तेहहै चिरकालकी ५
२ क्रिवेसादेकाथ्य ॥ चौ० ॥ नेत्रवालअ
रूकुडापतीस धवेलोरसुसमकरिपी
स लज्जालूधणीयालेआउ विलक
थसौंठिगडूचीपाठ ५३ सोरठा ॥ अ
तीसारचिरकोल भूषहोइपाचनविम
ल औषधकरिततकाल कह्योग्रंथसा
रिंगधर ५४ अथग्रहणीचिकित्सा ॥
अथसालपर्ण्यादिकाथ ॥ सालपर्नधन
णीयाविमलवालाविलकैसंग सन्तु
वासौंठपहाडकी कह्योग्रंथसारिंगध
र ५५ वातग्रहत्तग्रहणीहरै हरैशूल
अधमान काढोकरिकै दीजियेजानहु
वैद्यसुजान ५६ अथचातुर्भद्रक
काथ ॥ गिलोइसौंठिमुथ्याविमलप
तीसविमलअभिराम पाचनग्रहणी
वातदुख चातुर्भद्रकनाम ॥ ५७ ॥ ॥
३३

अथलघुमजिष्टादि॥ मंजिष्टात्रिफलाक
टुलीजैनिसागिलोइ नीवछालआ१
निकेरालहलदलैसोइ ५८ कपाल
कुष्टकमलहरैवातरक्तपुनसोइ मंड
लरक्तविचर्चेका देहसूत्पजोहोइ २
५९ अथवृहमंजिष्टादिकाथ॥ मंजिष्टा
पुनिइंद्रजव मोथाकडुगिलोइ कुडा
वाक्चीनीचवक कडूभेडंगीसोइ ३६०
त्रिफलाछुद्रायेविमलदोऊनिसापटो
ल विजैसारचीताकुडा त्राहमानले
मोल ६१ विडंगसतावरिसारिवामू
र्वातिवीकरजं महानिंवचंदनविमल
देवदारूइहसंग ६२ भृंगराजम
गधाविमलवरूणापाठमिलाइ ष
दरकिरातपतीपुनि कानीयालभीपा
इ ६३ वासाजलसाषोटपुनि पित्त१

३४ पापडाआन जवासासोरभ विमल काठा
करहुसुजान ३६४ कह्योग्रंथमाहिंग
धर अतिसुंदर अभिराम हरैकुष्टपुन
अष्टदस देहसूनकैकाम ६५ वातरक्त
उपरंससभस्त्रीपदअर्दि।तिसोइ नेत्ररो
गभेदीमहा पक्षाघातहिसोइ ६७ अथ
पथ्यादिकाथ नेत्ररोगे॥हरडवहेडाआव
ला हलद नींवकीछाल गिलोइकिरा
तमिलायके औषधपरमरिसाल ६७
गुडस्योंकाढारीजिये कर्नसूलनरहाइ
आधसीसीसंबदुष नेत्रपीडताजाइ ३
८ अथवासकादि॥सोरठा॥वांसासोंठ
गिलोइ रतचंदनमोथ्याकटु दारुहल
दलैसोइ त्रिफलात्रिकुटाइंद्रजव ६९
किरातनीवकीछाल सुंदरकुडापहाड
का काढाकरततकाल नेत्ररोगपीन
सहरै ३७० अथअमृतादिनेत्ररोगे॥ ३४

छिन्नात्रिफलाक्काथकरिमघपीपर
सोदेह नेत्ररोगसभहीहरै काठाकर
कैदेहु ३११ अथत्रिफलादिकृम
रोग॥दोहरा॥त्रिफलामोथसुहंज
णा देवदारुपुनिसोइ मूषाकरणी
अतिसभग कह्योग्रंथमतिसोइ १
२ कृमरोगसभहीहरै काठाअतिअ
भिराम पीपरवाइविडंगस्यो दीजैप
हिलेजाम १३ अथत्रिफलापांडुरो
ग॥अनुत॥हरडेवहेडाआवले वांसा
कडूगिलोइ नींवछालिजुचिरताका
ठाकीजैसोइ १४ मधुस्योंदीजैप्राति
उठिपांडुकामलाजाइ कह्योग्रंथसा
रंगधर गंगारामसमझाइ १५ अ
थपुनर्नवादिपांडुशोथ॥चौ०॥पुनर्नव
सोंठगिलोइलेहु दालहलदहरडे
समदेहु नींवछाललैकडूपटोल

दि

३५ गर्उमूत्रस्यौंदीजैघोल पांडुकासस्वा
सपुनिसूल भाजैसर्वसौष्यकोमू
ल कह्यौग्रंथमतिजोगवषांन पुन
र्नवादेअतिअभिराम १६ अथ
एलादमूत्रकृछ्रको॥दो०॥एलापी
परनेनुका मुहलेठीअभिराम पा
षांनभेदवांसाविमलहरडगोषरू
काम १७ सिलाजीतपुनिशर्कराअ
नूपानस्यौंदेहु सभैरोगपुनिकृछ्रके
तेसभहीजुहरेहु १८ अथहरीतका
दमूत्रकृछ्रकौ॥हरडधवासागोषरू
ऽस्मभेदकृतमाल लीजैकाठासहत
स्यौं मूत्रकृछ्रकौटाल १९ पीरादाह
विवंधपुनि मूत्रघातकौदेहु कह्यौग्रं
थसारिंगधर सभहीरोगहरेहु ८०॥
अथगोषरपंचांगकाथमूत्रकृछ्रे॥चौ
पई॥समूपंचांगभंषडेलेहु काढामधु
मिश्रीस्योदेहु मूत्रकृछ्रदिनसप्तमि ३५

अंवलतास

टाइ म अथातकोऊ नरहाइ ८१
अथफलत्रिकादिसर्वप्रमेह॥ त्रिफ
लाइंद्रवारुणीलेहु दालहलदि मोथा
पुनदेहु निसापीसकाढेमइपाइ छ
बलाक्रोष्ययेतनरहाइ ८२ अथव
धअंडकोकाथ॥ वचनारछालकाः
थकरि दीजैसौंठिमलाइ गंडमाल
दिनसातमे महाप्रलैसोजात ८४
साबोटवलआनिके काढाकरौसुजा
न स्त्रीपदमेदकेभेदसम गुड़मूत्र
अनूपान ८५ अथउपदंसकोकाथ
॥पटोलपत्रत्रिफलाविमलविजै
सारपुनिषेर नींवछालनोतनविम
ल काढाकरौसवेर ८६ जोगराज
स्योंदीजिये केगूगलआभदि ब्रह
णनामउपदंससम सप्तदिवसस
मैजुदि ८७ अथभगंदरकोकाथ॥
बहेरवहेडेआवले नोतनहरडेले

३६ हु क्वाथ भगंदर रोग को महर्षी घृत
स्यौं देह ८८ सोरठा ॥ पीवत दीजै घो-
ल चूरण सवाइ विडंको काढा करो अ-
मल सर्व भगंदर को हरै ८९ अथ
मूत्ररोधन चिकित्सा ॥ एलादि क्वाथ
मूत्ररोध को ॥ दो० लाहर डे अरंड जरु
धवासा अति अभिराम पाषान भेद
त्रिकुटा विमल सुलोपि यारी भाम
९० बीज मेल पुनकर्कटी अथवा पेठे
मेलि यह काढा सारंगधर मूत्ररोध को
रेलि ९१ अथ त्रिफलादि चूरन वा का-
थ ॥ हरड बहेडे आवले ले हकर्कटी वी-
ज सिंधा लौंग मिलाय के तप्तनीर स्यौं
पीज ९२ [redacted]
मूत्ररोध पुनिदाह को चूर्ण अति अ-
भिराम ९३ लिख्यो ग्रंथ सारंगधर अ-
नुत गंगाराम ५३ अथ मूत्ररोध को
३६

काथ ।। तिलसमधमकीराषकरि मिश्रीदू
धमिलाइ मूत्ररोधपुनिदाहपुनि पीव
तछिनमहिजाइ ६४ अथदस्त्रामूलका
थवात्रिफलाकाथ ।। काठाकरिदसमूल
कौ मघपीपरस्यौंदेहु अथवात्रिफलाका
थकरि मिसिरापीपरयेहु ३९८ जोग
दोइमेएकहै दोउअतिअभिराम ग्रीवा
सिरकेसूलको कर्नरोगकेकाम ९९
संषनेत्रपुनतालुवा जाठागलगृहपीर
नासापीनसकासहरि ओसमहरैसमी
र ४०० इतिश्रीपुरुषोत्तमआत्मजगंगारा
म सर्मणाविरचितेसारसंग्रहभाषासं
वंधेकाथचिकित्सापंचमसमुदेस्र ।।५
।। अथचूरणाकरनेकीविधि ।। सूके
ओषधआनिके वस्त्रछाणिकेले
हु अनुपानसुनिग्रंथके कर्षमात्र

३७ पुनिदेहु २ अथआमलकादिचूरणसर्व
ज्वरकौ।। आमलचित्रकपीपरै सैंधात्रि
वामिलाइ चूरनअतिअभिरामहै लगे
भूषअधिकाइ ३ दीपनपाचनकफ
हरन भेदीरुचकेसोइ उष्णशीतसमज्व
रहरन सभैग्रंथमतिहोइ ४ अथमधुपि
प्पलीसारंगधरमतात्।। वीनलेहुमघपी
परै निर्मलमधुसौंदेहु कासस्वासहिचकी
हरै छधवालकौदेहु कंडुरोगअद्भुतम
५ हा पल्लीहरनतेजारण वर्द्धमानकरदी
जिये पीपलअमृतसमान ६ अथल
घुसुदरसंगडूच्यादि।। गडूचीकडूगिलो
इमिलाइ मुहलेठीआवलेपाइ सूंठक
टाइपुहकरमूल मिरचहलदपीपल
अनुकूल काकडासींगीत्राह्मसमान
पित्तपापडापत्रजआन सालपर्णपु
निकुडामिलाइ दृगवालनामूवीलेआ ३७

२ कलौंजीकाला अगरु लाइ तजप
तीसपटोलमिलाइ मोथ्यादेवदारु अ
भिराम ७ जवाइनहरडैचीत्ताराम इ
कतीसवालैपीपरमूल समभऔषध
लीजैसमतूल नैपालीचिरायताजा
न समभऔषधत्तै अर्ध आन १८ वस्त्र
छाणचूरनकरहु सुंदरसनअतिअ
भिराम तप्तनीरसौंदीजिये दीजैपहि
लैजाम १९ ज्वरअनेककामलहर
न दाघमोहकासूल भ्रमतंद्राहिचि
कीहरन संन्नत्रियोदशमूल ४२०
पांडुरोगहृद्रोगपुनि कासस्वासह
रिसोइ सुदरसनअतिअभिरामहै
जोगवाहतैहोइ २१ अथषोडशांग
चूरन॥षोहुकरमूलचिरायता कडु
पटोलगिलोइ मोथ्यासैंधासिवापुनि
जुग्मसौंठलेसोइ २२ उभयकंटाइ

पापड़ा दंतीपीपरमूल कचूरमिलै षोड
समिलै सभैद्रव्यसमतूल २३ तसूउ
दकसौंदीजियै टांकदोइअभिराम वि
षमनिसाज्वरकौंहरै यहविधकियोसु
जान २४ दूजोतीजोनित्यकोपुनचौ^
थ्याईनाम षोडशांगअभिरामहै अद्भु^
तगंगाराम २५ अथलघुसुदरसनअ
अतमतान॥ त्राहमानअजमोदलै ता
लीसव्योमअभिराम तजमोथ्यायेला^
विमल समलैगंगाराम २६ समस
मलेइचिरायता माषसातपुनिदेहु
सुदरसनलघुअतकह्यो सभज्व
रहंतादेहु २७ अथसर्वज्वरकौचूर्ण॥
नाइगिलोइचिरायता मघपीपरलै
सोइ लघुदीर्घकौदीजियै नासर्व^
ज्वरहोइ॥२७॥ अथपित्तज्वरकौचूर्न॥
चौपई॥ नौतनपर्पटकौलैआठ टां^

कदोइजलसाथमिलाई दाघपित्तज्व-
रनासकरेहु देषग्रंथसुश्रुतमैलेहु २
७ अथदाघपित्तज्वरकोचूर्ण॥ दुगवा
लानागरविमलचंदनमोथउसीर पि
त्तपापडाआनिकेदीजैसीतलनीर २
८ दाघपित्तज्वरकौहरै सभैपित्तकेरो
ग कडुसोथअद्भुतमहा यहसुश्रुतको
जोग २९ अथवातज्वरकोचूर्न॥ त्रिकु
टाकडूकिरातपुनि सौंचरसिवामिला
इ चूरनेअतिअभिरामहै बातवात
ज्वरजोर ३० अथवातज्वरकोचूरन॥
गुडूचीकडूकिरातपुनि पित्तपापडामो
थ मघपीपलनागरविमल वातपित्त
ज्वरसोथ ३१ अथज्वरकोचूर्न॥ गुडू
चीअरुमघपीपरै नागरआनमिलाइ
दीजैजलसोंटांकद्वै होइसीतज्वरहा
न ३२ अथचतुर्थज्वरकोधूणी॥ गू-

३९ गलकूलूपछसनि स्यामवस्त्रमैपाइ
धूपदेहुतुमतीनदिन जुरचौथाईजा
र ३३ अथत्रिफलासर्वज्वरे॥ चौपई॥
हरडेएकबहेडेदोइ आमलच्यारत्रिफ
लालैसोइ प्रमेहसोथविषमज्वरजाइ
पित्तस्लेष्मकुष्टनसाइ औषधसभै
रसायणजाण सारंगधरनैकह्यौवष
षाण त्रिफलाघृतमहतसोदेहु ने
त्ररोगसभहीजुहरेहु॥३४॥अथत्रूष
णचूर्नवातगुल्मादसूले॥ सौंठमिरच
अरुपीपरे त्रूषणयाकोनाम दीपनपा
चनमेदहु कुष्टहरनअभिराम ३५ श्ले
ष्मपीनसकासहर स्वासकासअभिरा
म ज्वरहरनपुनिगुल्महरि अद्भुतगंगा
राम ३६ अथपंचकोलचूरन॥ पीप
रचीताचवकले सौंठसुपीपरमूल पं
चकोलियानामसुनि मिटैउदरकोसू

ल ३७ रोचकपाचककफहरनगुल्म
अनाहपलीह मंदअगनिचिरकाल
की तम्रदिकसौंदाह ३८

॥अथविषमज्वरकोचूर्न॥
तुलसीमिरचाअनिकेजलसौंदीजैपी
स पंचविषमज्वरनासहै दीजैगुआरी
स ३९॥अथत्रिफलाचूर्ण॥त्रिफला
पुनिमघपीपरे चूरनअतिअभिरा
म स्वासकासज्वरकोहरै सिधजोग
अतिराम ४४० अथत्रिफलायोगदू
जा॥त्रिफलादीजेसहतसो अथवा
नागरनीर लेहकियेज्वरकोंहरै कं
ठरोगकीपीर ४१ सूलहरनपुनिछु
धाकविवारछर्दकोरोग स्वासकास
चिरकालदुषसारिंगधरयहयोग ४
२ अथरक्तादि॥चौ०॥निसोतपीपरे
फूलप्रयंगु चूर्नकरत्रिफलालेसं
ग चूर्नसमनिस्री लेआउ टांकदो

४० यजलसाथपियात सर्वकुष्टदाहकोदे
हु ज्वरहंताभेदीमुनिलेहु तीरत्तादहे
याकोनाम हमश्रुअतनेक ह्योवषान
॥ अथअनंतादिचूरन॥ जवासाकडु
मोथा५ नागरविमल जीवमूत्रअभिराम नेत्रे
वालनोतनसुभग कहिकविगंगाराम
४४४ टांकदोइ जलतप्रसौं प्रातिकाल
उठिषाइ ज्वरहंतापाचनविमल कह्यो
ग्रंथसमझाइ ४५ अथत्रिसुगंधतथा
चातुर्जातचूर्न॥ गजकेसर एलाविमल
तमालपत्र त्रि पत्रजमिलसुगंध त्वकचौथी मिश्रत
किये चातुर्जातसवंध ४६ तुछउ
अकफपित्तजित रोचककफहर१
सोइ तीछ्नणपुनिअसगर्भधर क
फहेताअसहोइ ४७ अथअष्ट
वर्गचूरण॥ काकोलीछीरकाको
ली महामेदफुनिमेद रिधवृद्धजी ४०

वकरिषभ अष्टवर्ग इहमेद ४८ वाय
हरन हैहत्ताकरन ज्वरदाह ञतसोष
जीवनामगणनाम इमुहरैजायसभदो
ष ४९ गर्भधानजोवनीयजीवरिषभ
महामेद फुनिमधुजवीसेहलै जीवं
तीलैमेद .५० मधुमाषपरनिमुभग
गर्भधरअभिराम दुग्धसीतपुनित्रिषा
हरि अतिसुंदरअभिराम ५१ गर्भकर
नपुरसोबहर जीवनीयसमसोइ धर
तकरनपुनिवलकरन अष्टवर्गअस
होइ ५२ अथपंचलवण॥ सैंधा
सौंचरविड्लवनसमुद्रलवणगडलो
ण मिष्टस्निग्धफुनिकफहरन भ्रव
लगावतडोण ५३ अथश्टंगादिचूर
ण॥ स्टंगपतीसपुनिपीपरैं चूरनमधु
स्योंदेहु स्वासकासफुनिछर्दज्वर चूर्न
नीकायेहु ५४ अथसुंठादि॥ दोहरा॥

ककरा सिंगी
२३

संठिपतीसचित्रकविमलहिंगुसेककै
लेहु जीवमूलइंउजव चूरनकरिकै
देहु ४५ तक्रोदकसोदीजिये चूर्नअ
तिअभिराम कह्योग्रंथसारिंगधरग्रा
हीपाचनअव ५६ अथहरीकादि॥
चौपई॥ हरडैसैंधासोंचरआन हिंगु
पतीसवचएकसमान तक्रोदकआ
मकोंदेहु अतीसारपाचनमुनिलेहु
॥५७॥ अथलघुगंगाधरचूरनअतीसा
रे॥चौ०॥ मोचावील्वइंउजवलेहु
मोचरसधातकीमेदेहु चूरनतक्र
अरु गुडस्योंषाइ अतीसारछिनमे
षंभाइ॥५८॥ अथवृधगंगाधरचूरन
॥चौपई॥ मोथाअरलूसोंठिओधावैने
त्रवालपुनिलोदमिलावै विल्वकथु
पाठइंद्रजवलीजे कुडामोचरसत्ता
मेदीजे अम्ब्रवीजपतीसलजालूगं
गाधरकरछाडननालू तंदुलजल

सहतस्योंदेहु अतीसारसंग्रहणीहरे
हु ॥५९॥ अथमिरचादिवंधकोष्टकोअ
नुत ॥ चौपई ॥ मिरचै चित्रकु सोचरली
जै चूरनकरतक्रस्यों दीजै उदरविका
रसंग्रहणीजाइ नित्यप्रतिटांकदोइजो
षाइ ॥४६०॥ अथकपिथ्थाष्टक ॥ वुध
कपिथ्थलेआठपल मिश्रीषटुपल
लेहु धावैअजमोदाविमल दाडिम
वील्वसरोहु ४६१ मगधालीजैनि
त्वंडी तीनरपलजाण धणीयाजी
रामिरचपुनि चातुर्जातसुजाण ४
६२ नेत्रवालनागरविमल चीत्रा
सोंचरूपाइ जवाइनपीपलमूलपु
नि पलरसमतामाइ ॥६३॥ अती
सारसोणतहरन ॥ ग्राहीअतिअभि
राम वातगल्मग्रहणीहरन कपि
थ्याष्टकनाम ६४ अथलघुदा
डिमाष्टकचूर्न ॥ दाडिमलीजेआठ

तमालपत्रतज
एलानागकेसार

पलऐंतीमिश्रीलेहु गजकेसरएला
विमलत्रिकुटात्तामैदेहु ६५ अतिसु
गंधपत्रजलैभिंन्न२पलएक॥रोचक
गलग्रह छुधाकरग्राहीतापअनेक
६६ अथदाडिमाष्टक॥दाडिम
मिश्रीएकसमआठ२पललेहु मगधा
पीपरमूलपुनि जीरेदोनूदेहु ६७
अजवाइनधणीयाविमलमिरचसों
छिइकसंग भिंन्न२लेएकपल त्वक
येलाइकसंग ६८ गजकेसरलेटां
कहैचूर्नअतिअभिराम ऐक कर्षअ
वडारीयेवंसलोचनानाम ६९ यह
चूर्नहैअमृतसम दाडिमाष्टक२है
नाम अतीसारग्रहणीगुल्महतं
कासकेकाम ७० गलग्रहणीपीनस
कोविमलछुधाकरनसपवित्र लेचू
रनभूपतमिलो अतिप्रसन्नहैमि
त्र ७१ अथलवंगादिचूर्न॥देवपुष्प

एलाविमल लैकचूरपुनिसुद्ध गजकेसा
रलैजायफल अगरस्यामसुनवुद्ध १२
त्वकउसीरनागरविमल चंदनजीरा
स्याम वंसलोचनपीपरै कमलवीज
अभिराम १३ नेत्रवालकंकोललै
ताभैतगरुमिलाइ सभतैआधीमिस
री दीजैताहरिलाइ १४ अथपतिस
भचूरनकौत्रिदोषसमनअभिराम रो
चकतर्पणवलकरन स्वासकासके
काम १५ कंडुरोगक्षिद्रोगपुनि रोप
णगुल्मप्रमेह अतीसारग्रहणीहरन
राज्यरोगकोदेहु ॥१६॥ अथजातीफला
दिसारंगधरात ॥ जातीफलएला वि
मल चंदनतगरलवंग गजकेसरऔ
पत्रलैतिवस्यामनौरंग १७ कपूरसु
द्धलैत्वकजीरालैसेत हरडेधणीयामो
चरस त्वगाछीलैभेद १८ सिप्रसौं
ठविडंगपिवतालीसमेलइहसंग येऔ

४३ षधल्लइएकसम एतीलीजैभंग ७९ चू
रनकीजैपीसिकै वस्त्रछाणिकैलेहु॥
जेतीऔषधयहसभे एतीमिश्रीदेहु॥
४८० दोइटांकमिलिसहतस्यों नित्य
धिकयहजोइ ग्रहणीउदरविकारपुनि
राजरोगमिटिजाइ ८१ स्वासकासह
रिहृधाकरहरैसलेषमपीर चूरनसा
रिंगधरकहै प्रतस्याहरैसमीर ८२॥
इतिजातीफलादि॥ अथमहाषाडचूर्न
सारिंगधरमतात॥मिरचैलीजैएकपल
गजकेसरपलएक तालीसलवणये
दोइपल एसमच्यारेटेक ८३ त्वकूची
त्रालैपीपरै औरपीपरामूल जीरालौ
जैतिन्नडी हैहैपलअनकूल ८४ अम
लवेतधणीयाविमल सोंठिषरहटी
पाइ वरचूरनअजमोदलैएलामाण
रलाइ ८५ भिंनरलैतीनपल चूरन
अमत्तसमान सभतैचोप्याअसलै
दाडिमवनुरसनुजान ८६ सभतैअ ४३

धीमिसरी रीजैत्ताहिमिलाइ महाषाठ^
चूरनविमलटांकदोइजोषाइ ८१ री
प्रअगिनिरोचकविमल स्वासकासमत्ति
मारकंडुरोगक्रिमिरोगपुनि समहीउदर^
विकार ८८ क्रमछेईअधमानपुनिवि
षुचीउदरविकार यहचूरनसारिंगध
र बुधजनप्रानअधार ८९॥इतिमंदा
ग्नौमहाषाठचूर्न॥अथनरायनचूर्ण॥
चौपई॥चित्राात्रिफलात्रिकुटालेहु पी
परमूलजवाइनदेहु हहुलैजीरासपा^
हसपेद वचसं ठी धणीयालैभेद ४८०
अस्वगंधअजमोदले पुहकरमूलक
चूर वाइविडंगपुनिचोकलै तीनैछा^ माजीज वायारु सुहाग
रलैपूर ८१ वचाकूठपुनिलवणलैप^
लपलसमताभाइ ६ द्राइणलैदोइपल
दंतीतीनमिलाइ ८२ तिवीतीनपलली
जिये सेहुउतिवीसमान पाचकधदतसौं
दीजिये नामनरायणजान ८३ रेचहो
इसमरोगहर कुष्ठहरनअभिराम स्वा

४४ सकासपुनियांउहा सभैउदरकेकाम ४
९४ अधमानहि रीजैमद्यसौं विषको
घृतसंगदेहु क्रिद्रोगभगंदरज्वरहरन
ग्रहणीनासकरेहु ९५ अग्नमंदुगल
रोगपुनि जीरनगोलावाइ जेतेरोगअ
नुपानविनजलतातेसोंषाइ ९६ वि
वेसीउदरविकारसभै उष्टीपयसोंप्या
इ अजागोकीतक्रसोंलगैमूत्रअध
कार॥४९७॥इतिनारायणचूरनसारंग
धरात॥अथहहुपुष्यादचूर्ण॥हहुत्रिफ
लागजपीपली कनीयालुपुनचोक
ग्राहमानसहुडसुभग पांचलवनसुग
शोक ९७ पीपलत्नेपुननीलनीवच
सोकडुमिलाइ अनुपानसुनअवकह्यो
चूरनदेहुरलाइ ९८ उष्नोदकगो
मूत्रसोदाडिमत्रिफलानीर केयहरी
जैमांससरस हरैअजीरनपीर ९९
पलीहरनपुनिगुल्महरि अरसषो

यकोनास विषमअगनचिरकालकी
मिटैपांडुकोन॥५००॥अथमनकुष्ट
कामलहरन॥औरसभउदरविकार
यथाजोगअनुपानसौंदैचूरनततका
ल ५०१ इतिउदरविकार॥हुदुष्यादचू
रन॥अथपंचमचूर्न॥नागरतिवीह
रीतकी पीपरसौंचललौंण इपाचौंस
मलीजिये लगैभूखपुनिदोन ५०२ वि
ष्टंभअफारासूलसभक्रिरोगहरअ
भिराम ५०३ इतिपंचसम॥अथनाद
चूरन॥कर्षएकमघपीपरेतिवीले
हुपलएक बांडसुभगपलएकलै
हर्नीसूलअनेक ५०४ गांठिविक
टअधमानपुनि औसबउदरविचार
कर्षमात्रदयसहतसौंकफपित्तहरैत
तकार ५०५॥अथविलवणादिगुल्म
को॥चौपई॥सैंधासौंचरसांभर

लैहु सेकसुहागातामैदेहु साजीज

४५ वाषारलैआर्उ कचूरहिंगुलैताहिमिला
र्उ ५६ नीवपत्रपाठाविमल कलौंजी
चीत्तकजान बचाविडंगलैतितडी अ
मलवेतकौआनु ७ दाडिमत्तिवीसता
वरी दंतीपुनिसुरदार इंद्रायणधणी
याविमलपुहकरमूलअपार ८ ज
वाइनपुनितुंवरू भाडंगीधणीयाजा
ण वेरचूनहरउे विमल समलैपीस
हुआण ९ अद्रकरससैभावना कइ
रविजोरीनीर अजीरनघतसोंदीजि
ये अथवामघुसधीर ५१० कैतरू
दीजैतप्रजल केदयतक्रमिला३ उ
षीपयसोंदीजिये कैयहसहतरला
य ११ कटपीराजलक्रतहरनपली
दकुहक्रिरोग गुदरोगविष्टंभपुनि
सभैउदरकेरोग १२ मंदअग्निज्वर
कालकीषीलगला अधमान स्वा
सकासहिकाहरनघतसोंसनोस

जान १३ इति त्रवलवणादि शारंगधरा
त।। अथ तुंवरादि चूर्न।। सोरठा।। तुंवरहि
गुविडंगलवणतीनजवषारपुनि त्रिवीज
वाइणसंग गुहकरमूलहरीतकी १४
सभओषधसमभागत्रिवीनलेएकतेस
मैउदरकीलाग १५ सभैसूलअधमा
नपुनिगुल्महरनअभिराम जलताते
सौंपीजिये तुंवराजइहनाम १६ इतितुं
वरादि।। अथ चित्रकादि।। चौ०।। चीत्नात्रि
कुटापीपरमूल चवकहिंगुकीजैसमतूल
ल अजमोदाआठवारेहु भिंनकर्ष
इकदेहु १७ साजीसेंधाविडलवलसमु
द्रलवणजोषार सांभरसोंचरलवणपु
नि करचूरनततकाल १८ भिंन्नरले
कोलइक चित्रकादइहनाम लिष्योंग्रं
थसारिंगधर चित्रकादिसमनाम १९
दाडिमरसदे भावनाकेरविजोरीनीर रो
चकदीपनछुधाकरि ग्रहणीगुल्मस
मीर २० इति चित्रकादि शारंगधरा

५६ ता॥ अथ वडुवानलचूरन॥ सोरठा॥ सैंधा
पीपरमूल मगधाचित्रकचववकलै॥
सौंठत्रिगवाअनकूल क्रमवृद्धसमभली
जिये ५२१ चूर्णदीजेतप्तजलटांकदो
इपरवान वडवानलसारिंगधर अधि
कमूषतूज्ञान २२॥ इतिवडवानलचू
र्नछुधाकृत॥ अथअजमोदादिचूर्नवा
गुटिका॥ दो०॥ अजमोदाचीत्रा विमल
देवदारुअभिराम सैंधापुहकरमूल
पुनि शतपुहपारहुकाम २३ वाइवि
डंगपीपलमिरच टांकटांकलेयेहु टां
कपांच हरडैत्वचावृद्धदारूदसदेहु २
४ नागरदीजैटांकदस चूर्णअतिअ
भिराम जलतातेसोंदीजीये गुटकागु
डसोंकाम २५ आमवातपुनिसोथह
रसंधपीरकटपीर पिष्टपीरगुदपीर
पुनि ग्रधसीहरनसमीर २६ जंघजा
नुगतपीरपुनि विश्वाचीकफवात॥
तूनीप्रतूनीपुअननमकैअजमोदा

तैजान ॥ ५२ ॥ इति अजमोदादि ॥ अथ हिं-
ग्वादि चूरन वा गुटिका ॥ हिंगु पाठ धरणी-
या विमल हरडै चित्रक चूर अजमोदा दा-
डिम विमल त्रिकुटा ता मे चूर २८ अम
लुवेत असगंध पुनि हहु जीरा लेस्वेत
चवक चित्तडी छार युगल लवण पांच सूण
हेत २९ वच चित्रा नोतन विमल नो
तन पुहकर मूल चूरन वा गुटिका क
रो सम भेद्र व्य सम तूल ३० भोजन सो
वात अस्यौं उष्णोदक सोपान केतरू
जैम द्यस्यौं जानहु वैद्य सुजान ३१ वा
त गुल्म हिक्का रोग पुनि पार्स दुख अधमा
न सूल हरन गद रोग सम भस नौं मित्र रै
कांन ३२ सोरठा ॥ जोनं रोग पुनि मेह
मूत्र कृछ्र हिक्का जरू त स्वास कास को
देह रोचक पांडु पत्ली हरन ३३ इति
हिंग्वाद्य गिंगधरात ॥ अथ जवानी षां
डु चूरन ॥ जवमी दाडिम तित्तडी अम-
लवेत पुनि सोंठ नेरचूर्ण अडतमद्रा मे

सेषटुकरजोठ ३४ भिंन्नरलैटांकद्वै२
नकार है विचारु मिरचालीजैटांकइके
करचूरननतकारु ३५ पीपलली^
जैटांकदसपुनि औषधकर लेहु त्व
कसौंचरधरणीयाविमल है है टांकगरो
हु ३६ चोपई ॥ टांकदोइजीरालय
आंडे मिश्रीचौसठटांकमिलाई टांक
दोयचूरनपरवान सारिंगधरतेक ह्यौ
बषान ३७ पांडुरोगक्रिम्रोगपुन ग्रह
णी अरसविकार छर्दसोथ अनाहपु
नि पलीहरननतकार ३८ सूलअरु
चमंदाअग्निपुन जिह्वारक्तविकार चू
रनकरकैरीजियै विवधहरननतकार
॥५३९॥ अथतालीसादिचूर्नवागुटिका
॥ कर्षएकतालीसले मिरचकर्षले दो
इ तीनकर्षनागरविमल मगधच्यार
लैसोइ ५४० वंसलोचन अद्भुतम^
हा पंचकर्षपरवाण त्वकएलालैक
र्ष है समतेदूनेजान ४१ समतेदूनी^

मिसरी करदीजे अभिराम रोचकपाच
कज्वरहरन अद्भुतगंगाराम ५४२॥
कासस्वासअरूसूलपुनि आननसोथ
अधमान पलीहपांडुग्रहणीअरस॥
जावेहुवैद्यसुजान ४३ अथसितोप
लादि॥ मिश्रीलीजैटांकदस त्वगा
छीरलैआठ टांकच्यारमगधाविम
ल वुधजनवांधैगांठ ४४ दोइटांक
एलाविमल टांकदोइपरवान स्वास
कासमंदाअग्न दुषपारसअधमान॥
५४५॥ अरोचकऔरसमी रहर हाथ
पावकीदाह ज्वरहंतापुनरुधरदुष
कफसुपित्तहरिआह॥४६॥ अथद
शांमृतहरीतकी॥ उदरविकारे हरडै
लीजेएकपल विभीतकलीजे दोइ॥
धात्रीफललेच्यारपलत्रिफलाइह
विधिहोइ ४७ मिंसरीलीजेच्यारपल
अतिउजलअभिराम मुहलेठीसें
धापीपै त्रगाछीरइहकाम॥४८॥

च्यारेऔबधदोइपल मुहलेठीतैजान॥
घृतसौसहतसौंदीजियै दसमत्तनाम
वषाण ४९ नेत्ररोगपुनिपटल करण
टलनरहाइ कांचतिमरूअरूवुंदरु अ
भटलकाछिनमेजाइ॥५५०॥कासस्वा
सउन्मादपुनि छ्रुतउदरकेरोग भछ
णकीजैरातकौ याकायहैसजोग॥५५
१॥अथनेत्ररोगकोकमलनिधिचूर्न॥
पीपलमधजेठीविमल हतआयुध
अभिराम सिषामधुसौदीजिये निस
वीजवजाम ५२ नेत्ररोगअद्भुतमहा
सषाइसरहनाम लिष्योंग्रंथसारिंग
धर वलकरगंगाराम॥५५३॥अथ
शिलाजीतचूर्णवलपुष्टको॥चोपई॥
सिलाजीतसतवाइविडंग सोधीसो
नमाषीइहसंग सिवासारपुनिताहि
मिलाइ निर्मलसर्पीमधुसोंपाइ॥
५५४॥सोरठा॥दुर्वलकौवलहोइ॥ ४८

धातवृद्धिदिनरकरै ज्योधापुष्टकरसोइ।।
बीजषपानजसचंद्रमा।।५५।।अथलं
वए।भास्करचूरन।।समुद्रलोएाअभिरा
मलैकर्षआठपरवान पांचकर्षसैधा
विमल विडतेओरवषान ५६ सांभर
धलीयापीपरै ओरपीपरीमूल अम
लवेतपत्रजलै कृस्मजीरअनुकूल
५७ गजकेसरतालीसद्रजल दसओ
षधयेजाए भिन्नरयेलीजियेहैहैक
र्षवषान ५८ मिरचाजीरासोंठलै
कर्षरतूजाए कर्षच्यारदाडिमविम
ल त्वकएलाकह्योवषान ५९ आ
धा-आधाकर्षलै इनकायहेप्रमाए
बीजपूररसभावनादीजैसातसुजाए
।।५६०।।चूरनकीजैपीसिकेकर्षयेक
परवान तक्रसुरापुनिमस्तस्यो केअ
सवाअनुपान।।५६१।।वातगुल्मग्रह
एीहरनओसभगंदरविकार वान

श्लेषमअरसदुष घाजेप्रातनिहार॥६३॥
विबंधअफाराशूलसम स्वासकासङ्कि
द्रोग पलीहरनपुनि छुधाकरदीपन
पाचनयोग॥५६३॥लवलभास्कार
नामयह सर्वरोगहितत्राण लिष्योग्रं
थसारिंगधर सभैभगंदरहाण॥६४
॥इतिलवणभास्कार॥अथएलादि
छर्दरोगे॥सोरठा॥एलाफूलप्रयंग
सितचंदनपुनिपीपरै कोलमज्जाइ
हसंग गजकेसरतालीसलै॥६५॥
लाजालीजैधातकीनौतनलैदुलवंग
चूरनकीजेपीसिकै मधमिश्रीकेसं
ग॥६६॥जेतेऔषधछर्दकेऔसा
औरनकोइ लिष्योग्रंथसारिंगधर
त्रिदोषसमनहैसोइ॥६७॥पुनिछर्द
कोचूरन त्वकलौंगाक्वाठोपीया॥
चाटौमधुसंयोग नासेछर्दअनेक
धा वाततपित्तकफरोग॥६८॥अथ

पंचनिंवकेचूरनकुष्टरोगकौ॥ पुष्पप
त्रलैनीवके जडउपरिजुगछाल पां
चअंगयेनीवके पांचोपरमरिसाल
॥५६९॥ तीनरपललएकलै येहमकहे
वषान चीत्नासारूपवाडुपुनि स्याम
मिलावैआन॥५७०॥ मिश्रीवाइविडं
गलैहरडआवलेसोइ त्रिकुटागोक्षु
रवावचीकनयालभीहोइ ५७१ मिंन
रलैएकपल चूरनअतिअभिराम
भ्रंगराजदैभावना पंचनीवइहनाम
॥७२॥ षैरक्काथदैभावना लीजैछाह
सुकाइ घृतअथवादैसहतस्यौंटां
क अठाईषाई॥५७३॥ केकाढापुन
षैरका अनुपानस्योंदेहु मासएक
परवानसुनि सभहीकुष्टहरेहु ७४
पामादहुविचर्चेकामंडलकुष्टकपा
ल रूधरकोपपुनिसून्यता रसाइ

नपरमरस्मालं॥५१५॥ अथ विडंगादिचूर्ण॥ चौपई॥ विडंग पीपरे चीत्रा लीजे मोथा देवदारु पुनि दीजे जीरा तज पीपरीमूल वहेड़े सोंठ षदर अनकूल ॥१६॥ मेठा सिगी सौफ ले गजपीपर अभिराम काकड़ासिंगी मिरच पुनि कटु भाडंगी नाम॥५१७॥ सम भाग लीजिये तप्तोदकस्यों देह टांक दोइ परमत्तक ह्यौ हरै गलामै येह॥१८॥ कंडुरोग अद्भुत महा कास स्वास हिक्का रोग कफरोग सभही हरै यह अमृतको योग॥५१९॥ इति श्री पुरुषोत्तम जगंनाथात्मज रामविरचितायां भाषासं भवति चूर्णध्यानयाष्टमसमुदेत्रा॥८॥ अथ गुटिका लिष्यते॥ अथ कल्याण गुटिका अनुमतात॥ चौपई॥ दूध चुवाइ सोपाणी लीजे

कांजीअवलीरसपुनदीजै अमलसआ
देकारसलेहु आठ२सोटांकसुदेहु ५८०
पलतेराह तिलतेललै गुडसोटांकले
आठ रसगुणसभै२कत्रलै बुधजनवा
धोगांठ॥८१॥ छंद॥ मंदमंददै आचसुप
कसुवारिये तांतछुटैजवगुडतेकाठ।
निहारिये माषयेकलैचासनडारीये
पसरनजा२गुणतवसरोससवारीये
आगेदेवता२ओषदीजेकहै गुडमेदेहु
मिला२सुअतेलहै त्रिकुटाकुडाप
तीस मिलावेकुंठपुनपीपलमूलरसो
तगोकाघीउसन ८२ देवदारुचीता
समगजवाछारअभिराम सैंधाधावे
येविमल अजुतगंगाराम ८३ टांक
आठ२एकलैपीसिमेलगुडमाहि टां
कतीनगुटिकाकरी सभैववेसीजाहि
॥५८४॥ स्वासकासहरग्रहनकामेह

५१ गुल्मछिद्रोग उदावर्त्तकफवातहरिषां
डुसोथकैजोग॥५८५॥आमदोषसभही
हरे बलपुष्टअभिराम पाचनदीपन
हैधाकरगुडकल्याणइहनाम॥५८६
॥इतिकल्याणगुड श्रीबाहुसालगुड॥
इन्द्रायणमोथ्याति्तवीदंतीसोंठरलाइ
हरडैचीत्राते्तजवल कचूरविलाइ ५
८७ नोतनलीजैगोषरू हैहै कर्षसु
जान सूरनलीजैआठपल आगेक
ह्यौवषान ८८ हेडूरारूपलच्यारुले
भिलावालेपलच्यार जलपुनितेरह
सेरलै लीजैक्वाथसवार ८९ चतु
र्थअंसजवलीजिये काठासुभगआमो
ल तीनसेरपलसातगुड साहजिहा
नातोल॥५९०॥चौपई॥गुडकाठाइ
कठारौकीजै लोहापात्रजमैसभरी
जै मीठीआंचसुपक्वकरीजै पिंडव ५१

धैतवहीउह लीजै पुनिग्रौषधतुहिदेउ
वताइ वस्त्रछाणिगुडवीचरलाइ ८१
चीत्रादंतीतिवीपुनतेजवल अभिराम ए
करपल लीजिये अद्भुतगंगाराम ८२
मिरचसौंठपीपरसुभग त्वकएकलेइ
संग मिरचशास्त्रमहियोकह्यो तीनर
पलअंग ८३॥ चौ०॥ इन ग्रौषधाका
चूरनकीजे॥ तातछूटैतवगुडमेदीजे
मधुषोडसपलदेहुमिलाइ कर्षएक
कागुटिकाषाइ ८४ सोरठा॥ गुडकी
जैरहभात सिवाहुलासमारिंगधर
सवैववैसीजात वातगुल्मअधमानह
र॥ ८५॥सोरठा॥ पीनसग्रहणीवातप्र
तस्याहरैप्रमेहसम गुणसमभकदेनजा
नरसाइनउत्तिमपांडुही॥ ८६॥इति
श्रीवाहुसालगुड॥ अथमिरचादगुटि

५२ का॥दोहरा॥मिरचै लीजै कर्ष इक दत
नी पीपल लेहु दाडिम लीजै कर्ष द्वै आ
ठ कर्ष गुड देहु ६७ अर्ध कर्ष जवषार लै
गुटिका सुभग सरूप टांक एक मुष रा
षिये सुनौ कान दै भूप॥५९८॥ षासी
हरै अनेक धा कंठ रोग हृद्रोग गुटिका
अति अभिराम है सारिंगधर सुभ जो
ग॥५९९॥अथ आमलकादि गुटिका॥
त्रिष्णा दाह मुष सोष कासादि॥चौपई॥
आमल कौल वीज अभिराम षील धा
न की लै रह काम वडकी दाडी कुडा मि
लाई चूरन करै सहत स्यों षाइ माष
दोइका गुटका कीजै रसु निगलै त
व मुष मै लीजै त्रिषा दाहु मुष सोष मि
टावै वार रवु धजन सम म्ह्यावै॥६००
॥अथ संजीवनी वटका संनपाते॥वि ५२

डुंगसौंठपुनिपीपरै वचत्रिफला अभिराम
गिलोइभिलावे विषविमल समलैगंगा
राम ६०१ गर्जूमू अस्यौ पीसिके गुटि
कारतीजुएक अर्धकरसस्यों दीजिये ह
रतरोगअनेक ६०२ सर्पडंककोतीनदै
विसूचीकोदोइ अजीरणकोएकदै च्या
रसेनकोषोइ ६०३ लिष्योग्रंथसारिंग
धर संजीवनइह नाम हरतासंन अने
कधमोरभगंगाराम॥६०४॥इतिसंजी
वनी॥अथव्योषादिगुटिका॥सौंठमिरच
औपीपरै अमलवेततालीस जीराची
त्रातितडी औरचवकलैपीस ६०५ ग
जकेसरयेलाविमलपत्रजमिलैसुगंध
कर्षरयेलीजिये गुटिकागुडकावंध ६०
६ समतैलीजै दुगणगुण गुटिकाकर्ष
प्रमाण लिष्योंग्रंथसारिंगधर अनु
तगंगाराम ६०७ पीनसकोअद्भुतम

५३ हा स्वासकासअभिराम कंडुरोगरोचक
विमलघ्रतस्याहरैसमान ६०८ इतिव्या
र्धई॥ अथचतुष्टयगुड॥ चौ०॥ अजीरन
को गुडपीपरदेहु आमहरनगुडसोंठसुएहु
मूत्रकृछ्रगुडजीरादेहु अरसविकारह
रहैगुडयेहु॥ ६०९॥ इतिगुडचतुष्टयं॥ अ
थइन्द्रदारूमोदकआदौ॥ चौ०॥ इन्द्रदा
रूभिलावा लीजै वरीवंधकर्षकीकी
टि जै ६१० प्रातएकसंध्यावईकपुनि भक्ष
नकोदेहु सर्वववेसीकोहरे सारिंगधर
मतिएहु ११ अथचंद्रप्रभागुटिका॥
कचूरपतीसपवित्रले मोथाअतिअ
भिराम देवदारूरजनीविमल दारूह
लदइहकाम १२ चित्ताधरणीयाले
ल विमल गजपीपलेसंग त्रिफलात्रि
कुटायेविमल पीपरमूललवंग ६
१३ चवैकिरातअद्भुतमहा सोंन ५३
क

माषीलैसुध जवाखारसाजीविमलसैं
धासौंचरवुध ६।१४ सांभरलैछवीस
वीइनकोकह्योप्रमान टांकरयेलीजि
ये जानहुवैद्यसुजान १५ त्वकऐला
इंतीविवीलैवंसीपत्रज टांकरयेली
जिये शुभनछत्रकरकज १६ सार
२६ कर्षलीजिये सिलाजीतपलच्यार
मिश्रीपुनिपलदोइलैकरचूरनतत
कार ७ माहिषगूगलच्यारपलकू
टहुघृतसंजोग चूरनगूगलपिंडक
रकर्षएककरभोग १८ चंद्रप्रभा
विख्यातहै हर्त्तारोगअनेक प्रमेह
वीसपुनपथरी मूत्रकृछ्रकीटेक
१९ मूत्रघातविविंधहरि अनाह
सूलअधमान जोनरोगसभहीह
रै वलकर्त्ताअभिराम ६२० अंड
वृद्धिकामलहरन प्लीहहरनरहना

५४ म चंद्रप्रभावसारिंगधर जानतगंगारा
म ६२३ पांडुरोगअर्बुदहरन अंत्रवृ
द्धकटसूल स्वासकासपुनपुष्टकर
कंडूहरविचमूल २२ मंदाअगनि
कोरूचकरनभगंदररक्तविकार दंतरो
गअद्भुतमहा रसाइनदेह अपार २३
नेत्ररोगसबहीहरन यहऔषधअ
भिराम माषच्यारिकैकर्ष इकसेवेगं
गाराम॥६२४॥इतिचंद्रप्रभागुटिका॥
गुटिका अथसूरनसारिंगधरात॥चौ०॥सूका
त्रिमीकंद सूरनचूरणकीजै बतीसटांकटैपर
मतसुनिलीजै चीत्रासोरहटांकपि
साउ च्यारकर्षलैसोंठमिलाउ मिर
चैदोइटांकपुनिलीजै पलबारहगु
डमेजोदीजै गोलीटांकअढाईषाइ
ववेसीछहप्रकारकीजाइ॥६२५॥इ
तिलघुसूरन॥अथवृद्धसूरनसार ५४

गधरात॥ सूरनसुष्क विधारना दोनों
समताभाई सोलह२ टांकलै आगै
देतुवताइ ६२६ चीत्तालीजैमूसली
नौनौकर्षप्रमान हरडवहेडे आवले॥
पीपलसोंठिसुजान २७ पीपलमूल
विडंगलै मिलावैलैतालीस द्वैद्वैकर्ष
प्रमानलै सभैऔषधीपीस २८ त्व
कएलामिरचैविमल कर्ष२ परमान
सभऔषधतेदूगएगुड गुटिकाकर
परवान २९ भूषलगैकफवातहर
ग्रहणीसरसविकार स्वासकासहृत्त
हरनपुनश्लीपदसोथअपार॥६३०॥
भगंदरहिक्काहरन पुनिहृद्रुतरूनता
होइ रसाइनउत्तमवलकरन प्रमेह
हरनसमकोइ॥६३१॥ इतिसूरनवट
का॥ अथमांडुरवटकापांडुशोथअ
रसविकारको॥ त्रिफलात्रिकुटाव

५५ चकलैचीत्ताापीपरमूल दालहल्लर
मोथाविमल देवदारूअनकूल ३२
सोनमाषीसोधीयेलैअद्भुतवाइविड
ग कर्षकर्षयेलीजिये चूरनकरइक
संग ३३ सभतैदुगरणामंडूरलै अति
सुपक्कअभिराम सभऔषधैअष्टगु
ण गउमूत्रइहकाम ॥६३४॥छंद॥
मंदरदैआंचपकाइउतारिये जवही
बांधेपिंडउतारिनिहारीये पुनवहली
जैपीसजुगुटिकाकीजीये कर्षयेकप
रवानसुभत्तणकीजीये ॥६३५॥दोह
२२ रा॥पांडुरोगमलहरन अजीरनअ
रसविकार मेहहरनकफहरन पु
निसोथहरनसुअपार॥३६॥उरू
स्तंभअद्भुतमहा पलीहरनअभिरा
म मंडूरवडीसारंगधर अद्भुतगंगा
राम॥६३७॥इतिमंडूरवटकाअरसा

रै॥ अथउन्मीनीवटिकाउदरविकार
कौ॥ दाषमुनक्कापीपरै नौतनहरडै
लेहु तीनूलीजैतीनपल तिवीदोइप
लदेहु॥६३८॥ चूरनकीजैपीसिकै गुड
समदेहुमिलाइ टांकदोइगुटिकाकरो
प्रातहोतनरषाइ॥६३९॥ आमदोष
समहीहरै औसमउदरविकार भूष
होइवुधजनसुनौपावनसुनोअपार
॥६४०॥ इतिउन्मीलनीवटिकावंधको
ष्टकोअद्भुत॥ अथब्रह्मादिवटिकावा
तउन्मादे॥ चौपई॥ ब्राह्मीलोंगभंग
रालीजै जावत्रीत्रिकुटाभलदीजै॥
केसरिजातीफलअभिराम अकर
कराचवकइहकाम॥६४१॥ अजवा
इनअजमोदलै पाठपीपरीमूल ए
लासोरन्नलीजिये कुलंजनपोहक
रमूल ४२ संषाहोलीतेजवल चू
रनएकसमान सभतैदूनी दाषलैगु

५६ टिकाकर्षप्रमान ६४३ वुद्धिकरनपु
निभ्रमहरन उन्मादहरनपुनिसोइ
भूतदोषसभहीहरै देवदोषसभषो
इ॥६४४॥इतिब्रह्मादिवटिका॥अथ
काकीयवटिका॥चौपई॥हरडैपन्न
असीअभिराम जीरामिरचपीपली
कांम सोलह२टांकमगावै दुगणए
कतैसौंठमिलावै चवकलीजै अठ
तालीसटांक चीत्तालीजैचौसठये
आंक सतुवासौंठिआठपलजाण
जवाछारपलआठवषाण॥६४५॥
छंद॥तेराहपल३करंगमिलावै
लीजिये टोपीकीजैदूरस्वछसभ
कीजिये द्वैसेछप्पनटांकसूरणजा
णीयेसभऔषध३कठोरेचूरनछा
णीये ४६ गुडसोलासैछाणावैपर
मतिकहीसुजाण चूरनगुड३कपि
डेकरटांकच्यारपरवान ६४७ मि
५६

षतकअनुपानस्यों तम्मोदकस्यौंदे
कु काकीटिषकहयौसिसस्योअरसस
त्रहहैरहु ६४८ पांडरोगग्रहणीह
रन दीपनपाचनजारण उदररोग
सभहीहरैसुश्रतकह्यौवषाण॥६४
८॥इतिकाकीगुटिकासुश्रतमतात॥
अथकाकीवटिकासारिंगधरमतात॥
अडिल्ल॥अजवाइनधणीयाजीरक
मिरचैलीजिये कनीयालअजमो
दकलोजीदीजिये परमतिच्यारच्या
रयकतूजानले अष्टटांकलेहींगु
सचूरनमैमिलै साजीजवकाषारू
सुहागामिलाईये सांभरसेंधसौंच
रूतामैपाईये समुदलोणविडलो
णसुपाचौएकहै नौतननतिवीमिला
उ औषधीनौलहै टांकआठपरवा

५७ नएकहीएकपुन समहीदेउवतायस्
आगेओरसुन पुहकरमूलविडंगरा
िसमवीजपुनि हरडैसौंठकचूरसचित्र
केकहोमुनि अमलवेतपुनिदंतीनि
मिललीजिये सोलहर टांकसचूरन
कीजिये वीजपूररसगुटिकाकीजैटां
कद्वै वातजाइजवरजनीदीजैप्रातद्वै
॥६५०॥ वातगुल्मदैमधस्योंकफगुल्म
गोमूत पित्तगुल्मगोदूधस्यो अनूपा
नसुनजूत ६५१ त्रिदोषगुल्मदसमू
लस्यो उश्नोदकद्रिरोग उष्टीपेजव
तीविमल सूलहरनक्रमजोग ६५
२ अरसहरनग्रहणीहरनओस^
भंदरविकार लिष्योग्रंथसारिंगध
र कांकीयकहोविचार ५३ इति
काकीयनवटकाशारिंगधर॥ अथ^
५७

राश्नागुग्गल ॥ सोरठा ॥ राश्नासौंठगिलो
इ देवद्दारपुनअरडजंड गुगलमाहि^
षसोइ लीजैसमताभाइसम ६५४
गूगलअम्रतसमान टांकदोइजल
तप्तस्यौं ऐसीवाउसुजान हरैभगंद
ररोगको. ५५ कर्नरोगपुनितालूवा
नेत्ररोगअभिराम राश्नादिगूगलवि
मलअद्भुतगंगाराम ॥ ६५६ ॥ इतिरा^
श्नादित्रीसटमतात् ॥ अथजोगराजसा
हिंगधरमतात् ॥ चौपई ॥ सौंठपीप
रैवाइविडंगपीपरमू लचीत्ताति^
संग हिंगुभूनिअजमोदालीजै गज^
पीपलभाडंगीदीजै सरस्यौंजीरास्या
हसपेद कडूपत्तीसइंद्रजवभेद पा^
उलरेनुकामूर्वालीजैटांकरसवऐसो
दीजै त्रिफलासमतेदुगणाले चूरन
अतिअभिराम गुगललीजैसुद्धक

५८ रसभसमगंगाराम ५९ चूरनगुगलए
ककरि कूटहु घृतसंजोग लांत छुटीज
वज्ञालीयौकर्षमात्रकरू भोग॥६६०॥
अनूपानसुनअवकह्यो कहे ग्रंथमति
सोइ सभविधिहरैसमीर कोविरला
वूझैकोइ ६१ जोगराजगुगलसुभग
त्रिदोषसमन अभिराम रसाइनउत्ति
मवलकरन सभैस्वासहरकाम॥६६
२॥सोरठा॥ग्रहणीअरसविकारस्वा
सकासमवर्षीदुषे गुटिका धातअपा
र जुवतीरतिपुनगर्भदा॥६६३॥दोहु
रा॥आरगवधिसोंदीजिये दालहल
दकरिक्काथ॥पांडुरोगगोमूत्रकेदे
हुसहतकेसाथ ६४ नीवक्काथ
सोकुष्टहरि गिलोइक्काथसोपित्तसं
धपीरराश्नादिसोंजोगराजकरूमित
॥६५॥इतिजोगराजसारिंगधरात॥अथ ५८

त्रयोदसांग गुगल अमृत मतात ॥ दो० ॥
नौतन लीजै तेज बल नौ तिन तिवी गि
लोइ हहु लीजै पुनि गोषरो माल का
गुली सोइ ६६ सौंफ जवाई न सोंठ
लै राश्ना लै असगंध क चूर सतावर
रये विमल कर्ष२ सम वंध ॥६७॥
रन कू चूरन कीजिये सभ सम गूगल
देहु सुभदिन घृत सू कूटिये तांत छु
टै जवलेहु ६८ टांक एक गुटिका क
रोहु तप्रोदक सौं देहु के त रु हीजै स
हत सौं मूग जूष सो येहु ६९ वात रो
ग सभ ही हरै है ग्रधसी रोग हाथ
पाव दूही दुषै यह अमृत को जोग
॥६७०॥ संध पीर जड़ा दुषै ॥ जान
संध गति पीर ॥ त्रियोदशांग गुगल

५९ विमलसभविधिहरैसमीर ॥६११॥ त्रि
त्रिदग्धागुगल ॥ अथकैशोरगुग
लगुणरिंगधरमताता ॥ हरउवहेडेआव
ले नोतन लेकुगिलोइ च्यारे लीजैए
कसम सोलहरसोइ ६१२ च्यारेऔ
षधकूटिकै लोहपात्रमैदेहु समऔ
षधैदुगणाजल काठाकरिकैलेहु ६
१३ ॥ छंद ॥ दैदै मीठीआंच सुपक्ककरी
जे आधोरहैसुजान छानतवलीजि
ये सोलहपलगुगलशुद्धकाथमेडा
रीये वहुस्योदीजै आंच सघनउतारि
के १४ गुडकापाकजसकीजिये
करुकिसोरुइहभात सिद्धिभयो
तवजाणीये [redacted] लग्योचट
स्योजात १५ भुवपरधरोउतारि
के कछुकैजवैसीपराइ आगेऔ

षधजोकहे सवहीदेउवताय १६
त्रिफलालीजैदोइपल पुनिगिलोइ
पुनइक सौंठिमिरचऔ पीपरै लै
पलपललयैटेक १६ नौतनरंतीत्ति
वीपुनि कर्षरपरवान लैविडंगपुनि
अर्धपलचूरनकरौसुजान ६७॥
॥चौपई॥चूरनलैगुगलमैदीजै कू
टकाटघृतभाजनकीजै गुटिकाक
र्षएकपरवान आरिंगधरत्तैक हौव
षान १८ तप्तोदकपुनिदूधस्यौं का
ढामंजिष्टादि सर्वकुष्टपुनिसर्वब्र
ण कैकाठाषदिरादि १९ वातरक्त
मंदाअग्नि औरप्रमेह छवीस गु
लमहरनपुनिकासहर कांतिका
रपुनिद्धि ६८० पांडुहरनपुनि
सोथहर रसाइनउदरविकार॥

६० गुगलनाहिकिसोरसम गुनजनम्रान
म्रधार ८१॥इतिकिसोरादिगुगल
गारिंगधरात॥म्रथत्रिफलागुग
ल॥त्रिफलालीजैतीनपल पीप
ललैपल्लएक इनकूचूरनकीजिये
लैगुगलसमटेक ८२ गुगाललो
जैपांचपल चूरनदेहुमिलाइ घ
तस्योंलीजैकूटिकर तोंतछुटैज
वबाई ८३ म्रगनप्रवलगुटिका
करै हरैभगंदररोग गुल्मसोथ
म्रद्भुतमहा म्ररसहरैयहजोग
॥८४॥इतित्रिफलागुग्गल॥म्र
थगोक्षुरकादगुग्गल॥दोहरा॥म्रा
ठवीजगोषरूषटुगुणलीजैवारि
चूरनकरिकेभंषउलीजैक्काथ
सवार ८५ छंद॥मंदरहैम्राचस ६०

थुकैरूधरताकोविमल पलहिरनअभि
राम रक्तपित्तअद्भुतमहा संतर्पताअ
भिराम १०९ ॥इतिएलादिमोदकसर्व
गदानिहंता॥अमृतादिगुग्गल॥सोर
ठा॥गीतननलेहुगिलोइ त्रिफलात्रिकु
टापटोलजड सम्मभागयेसोइ गुग्गा
लकैतुल्यलै ११०॥ दोहरा॥चूरनगुग्ग
लएककरि कूटहुघृतसंजोग टांकए
कगुटिकाकरहु अहोरात्रिकरिभोग
१११ रुद्रकोपसमधूहणाहरनअभि
राम शोफहरनपुनिपांडुहा अमृता
दिइहनाम ११२ इतिअमृतादिगुग्ग
लजोगसम्माप्तमतात॥अथपिप्प
लीमोदकजोगसम्माप्तमतात॥चौ
पई॥पीपलचीत्तादंतीलीजै पलर
लैइकठौराकीजै हरडैपुनिवीसस

मगावै लैपविन्नगुडहै पलपावै ।३।
दोहरा॥ मोदककीजैसहतस्यौंकर्षप
रवान स्लीपलहाहरणकोहरै कह्यो
योगसन्मान ।४॥ इतिपिप्पलीमोदके॥
अथकछदद्दुकोसिद्धजोगषाणगोमू
त्रस्यौंअोटाइलेपुकीजै॥चौ०॥जवाछार
जुगनिसाविडंग सरस्यौंकूठत्रिकुटाइक
पनवाडकेबीज संग चक्रमर्दमूलेकेवीज गुग्गालचूर
नसमलेदीजै कूटकाटइकठोरा कीजै
पिंडवधेतवहीउहलीजै टांकरोइपर
वानगउकेमूत्रस्यौं पामाहरैअनेकद
द्रूतस्यौं॥१६॥दोहरा॥लेपकरोकछ
दादको गउमूत्रस्यौंपेष लिष्योजोगस
नमानतेसिद्धिजोगमैदेष॥१७॥इतिज
वाछादिगुग्गलसिद्धिजोग॥अथपिप्प
लीमोदकवातशूलज्वरहिक्कादौ॥चौ०॥

पीपलचीताअसगंधलीजै चवकवि
डंगजवानीदीजै सौंठकरोजापुहकर
मूल एऔषधमेलोसमतूल दूनेगु
डमैगोलीकीजै टांकदोइपरवानधरी
जै प्रातहोतनरगोलीषाइ सकल
देहकीवाइनसाइ संधपीडसूलस
नजाहि ज्वरसरवतननेकुरहाहि
स्वासकासभ्रममोहनसाइ सिरवत्त
कानकीपीडाजाइ॥११८॥दोहरा॥
बंधकोष्टमंदाअग्निपुनिआकडद्यो
लाजाइ उदरविकारऔवद्धको तसौ
दकस्यौषाइ॥११९॥अथवातस्वास
कास॥गुटकाचर्कमतात॥चौपई॥
सौंठिछिकनीसमकरिलीजै माल
कागुणीदुगणीदीजै पीसिछाणिइ
कठौरीकीधरै षेत्सकमधुस्योंगो

लीकरै टांकएकपरवानवषानक
छौचर्कयहअमृतसमान स्वासका
ससभगाइनसाइ मूलमोहकीपी
डाजाइ दीपनपाचनभूषलगावै
वारद्वुधजनसमझावै ॥७२०॥१
अथडोलेतयासंधपीतरक्तमध्ये
सीततथानिवलमंदाग्नाकोचूरन^
चर्कमताते॥ चौपई॥ सोंठिपीपरी^
मूलमगावै चीत्तास्यामभूसलीपा
वै असगंधअोरकूठकोजान हैहै^
टांकप्रमानवषान पीसछानिकै^
चूरनकीजै टांकदोइकीपुडीवधीजै
जै अजादूधसोंजोनरषाइ आकड
ओलीछिनमैजाइ सीवलकोअअ
यलैकरै वातसीतप्रस्वेदहिहरै २
१ दोहरा॥ भूषवहोइपाचनमहा

वंद्रकोष्टकोटाल सिंघलहरनदीप^
नकरण पुनिवलकरै अपार॥१२२॥
॥इतिश्रुर्गदिवातप्रकोपेतुचर्कमतात्
॥अथमहाज्वरांकसचर्कमतात्॥चौ
पई॥संषभस्महरतालेआन आठटां
कपरवानेजान मोरकलीकर्षहीलेहु
सभैओषधीछीनकरेहु सरसकुमारी
रसकोआने तीनद्योसकामर्दनताने
पुनसंपुटमाटीकाकरै रुभनछत्रलै^
तामेधरै २३ गजपुटताकौदीजिये
आठपहरकीआंच काटधरनमेदावी^
येज्वरहंताह्वैसाच २४ पीसछानिवि
लमैधरै गुंजमात्रपरवान सवैविषमज्व
रकोहरैमठाभातदेषांन॥१२५॥इतिम
हांज्वरांकसचर्कमतात्॥अथसिद्धज्व
रांकसचर्कमतात्॥दोहा॥मणिसिलली
जैपीपरैमिरचनींवफलजान द्वैद्वैटांक

६५ मगाइकेलीजेवस्त्रहिछान २६ गोम्ती
करैकरेलरसटांकएकपरवान सर्व
तापहरवातहर सिद्धज्वरांकसनाम
२७ कह्योचर्कसमज्वरहरन वातह
रनततकार समज्वरहेताज्ञानिके आ
त्रयदियोविचार २८ अस्मभेदतिल
रूपलैमिश्रीदुगणामिलाइ टांकदोइ
गोम्तीरस्योंप्रातहोइनरषाइ २८ मूत्र
रोधअरुधातगति पीवतभाज्जैजान
वलपुष्ट अरुसीतकर भाष्योचर्कव
षान॥१२९॥अथज्वरकोलेपनाभप
रतषानषपर॥चौ०॥हलदस्योंठिपी
परकौलेह फूलप्रयंगतगरपुनिदेहु
चंदनरक्तवीचतिहडारे पीसिछाणि
औषधीसवारे १३० दोहा॥जाज्वल
स्योंलोहावुझै तास्योंकीज्जैलेप आ ६५

वतज्वरकौकीजिये ज्वरनासतसभमे
द ॥१३३॥दोहरा॥सू कै वेग उत्तारिये अ
रु रलाइ ये मीत॥ अप्पज्वरकौ दंतमर्द
नचर्कमतात॥चौपई॥नीवपातकौ
चूरनकरै सुद्धकिरनरातिकौ धरै॥
प्रातहोत ताकौ लै आवै गुम्प्यारसति
हु वीचरलावै हिंदवांनेरसकी पुटदेइ
जिमीवीचिगाडिकै लेइ ३२ तीनदि
वसदाव्यारहै लोहपात्रमैपाइ पुनि
औषधकौकाढिकै देगोमूत्ररलाइ १
३३ गोकामूत्रमिलाइकै लीजै छांह
सुकार पुनिजवसू कैपीसिकै लीजै
वस्त्रछराइ॥१३४॥छंद॥माषदोइकी
पुरीवांधिकै लीजिये ज्वरआयेदंतनकौ
मर्दनकीजीये वेलाकोज्वर निसाज्वरभा
जै वातजर दंतपीडभाजै भाष्योचर्कवै

९९ वर॥१३५॥इतिमर्दनदंतनको॥अथ
चूरनधातछीणकोमनोरमाग्रंथात॥
॥छंद॥सीवलकसरसुकायालेहु ता
मैस्याममूसलीदेहु पुष्पसुपारीतामे
पावै तालमषाणासौंठिमिलावै नो
लगोषरू अतिअभिराम है है टांकप्र
मानवषान॥१३६॥दोहा॥समसमडा
रैषंड तिसमैराषैसकलमिलाइ अजा
दूधसौंटांकद्वै प्रातहोतनरूषाइ १३
७ कामदिकअरूवलकरन शुक्रहोत
हैमित्र कंतारसैअनेकही चूरनपरम
पवित्र॥१३८॥इतिवलचूरन॥अ
थसीतपुरूषकोचूरन॥छंद॥दोहरा॥
तालमषाणामूसली सौंठिभंषडेपा
इ कौचबीजअसगंधपुनि सीवलपु
ष्पमिलाइ वलासतावरमोचरस त ९९

जुलसूइज्ञान अज्ञाहू धस्योंजोपि
वैवदुतियरमैनित्तान ॥१३९॥इति
वलपुष्ट॥ अथकुंकमादिवटका
स्थंभनको॥अडिल॥कुंकमसिंगर
फजातीफलकौआनियें कौंचवीज
पुनसौंठमस्तकीज्ञानिये अकरक
राज्ञलवंगकिपत्रतमालके अज
वाइनकौडारिदेत सुबवालके ॥१
४०॥दोहा॥विज्जियारसदेर्भवनाली
जैछाहसुकाइ पुनिमधुसेतीपीसि
केसुंदरवरीवनाइ ४१ टांकएकप
रिमितकही औरतांवूलसंयुक्त
भोजननतेउपरांतिदिन सैनसमै
करभुक्त ४२ दूधपांनउपरांत
कर परमितसेरसुएक वीर्जपरै
नंवेगही कंत्तारवैअनेक॥१४३॥

६७ ॥ अथ स्थंभ कौ लेपन था नष पर ॥
॥ चौपई ॥ कुचलेजातीफलकौ आ
नै नीवपत्र अहिफेन हिठानै समुद
सोष अरु मीठा डारू पीस वारि सौं
लेप सवार अर्धअंगुल प्रमाण है जा
नु निसा लेप नाभि पर ठानु ॥ १४४ ॥
छंद ॥ जव लगु सूकै लेपन वै लगु ना
षिये सूक जाइ जव यौ छूभूमि मै ना
षिये परै न वीरज वेग महासुष पाईये
ग्रीषम की रुति वांच सदा यह लाइये
॥ १४५ ॥ अथ स्थूली करन लेपन ॥ दो
हरा ॥ वचा कूठ गजपीपरी असगंध
वला जु दोइ भैस मषन सौ लेपिये ॥
लिंग मूसल सम होई १४६ ॥ अथ
कल्प ॥ चौपई ॥ लोह चूर्न कर्ष है आ
६७

नै मुरदासिंघटांकहैजांनै लोहपात्रमै
रगडाकरै आमलजलकोतामैधरैसी
सेकेनालकेस्योंरगडे वृद्धअवस्थासेती
ऊगडे॥१४७॥दोहरा॥त्योरकर्मकरिकै
तिसै लेपनकीजैराति स्वेतरोमनहि
देषिये स्यामहोहिपरमात॥१४८॥अ
थजोनिसंकोचन॥छंद॥कुंकमओ
कस्तूरीसमकरलीजिये तामैमाजू
डारिकपूरहिदीजीये मधुस्योंगोली
वांधिजोनिमैराषिये सीकनआवै
छेदलिंगकाभाषीये॥१४९॥इतिश्री
सारसंग्रहभाषासंवंधेगंगारामसर्म
णविरचितेगुटिकालेषकल्पविधस
मसमुद्देश्च॥७॥संवत१८४६वर्षेमि
तीआषाढकृस्नपक्षे१२ रविवासरे॥
प्रतिलिष्यतंटेकचंदब्राह्मणलषेती॥शुभं॥

॥अथसूंठिपाकज्जो०चिं०॥प०॥तीनप्र
स्थसौंठिलेनीकीजुपिसाईये घृतकरत
प्रसमानमाहिलेपाईये॥षीरचतुरगुण
आणिकडाहेपावहो विश्वाघृतसंयुक्तदू
धविचनावहो॥१॥अग्निदेहुओटायकी
टीसमकीजिये॥पाछेतुरतउतारिथाल
मेलीजिये॥इणसमश्वेतजुषांडपातिप
काइये॥पक्कहोइजवषांडषोहाजुरला
इये॥२॥ जातीफलजाविंत्रीलवंगहि
त्रिफलाजीरास्याहसपेदकणाजुधरो
हला॥ऐलामोथाद्राषवालोघनसारही
षजूरविदारीकंदसतावरडारही॥३॥
अई॥२॥पलएहसभैजुमिलायीयें॥
गिरीआठपलआणिषंडकरिपाईये॥
सारपाषाणजुभेदटांकच्यारही सों
फचिरोजीवीजअईलेभारही ४ त्रि

पाईये अभ्रकटांकजुच्यारकपूरस
वासही सिताजुसर्वसमानपातिक
रितासही सिताहुतैअधमंगघीव
तलिपाईगुटिकाटांकप्रमाणाप्रभा^
तेषाईए ३६ व्याधहोइविध्वंसमि
टैपरमेहही छीणदेहह्कैपुष्टषुधा
करैएहही वधैधातपुनिवंधघटीदो
रच्यारह्ी कामिनिहोइषुस्यालवहु
तसुषकारही ३७ अथजावित्री^
पाक॥चौपई॥जावित्रील्यौएकैपा
उ पाचसेरत्नीरमाहैनाउ छतह्ा
दत्राग्नीरस्याहीतोल एतीनेइकठाक
रघोल ३८ दाणादारजुषोहाकरौ
उतारिलेहप्यालीमैधरौ सिता^
साठिसिरसाहीएहपक्कपातिइस

हीजुकरेह ३९ इसमाहेकीटीदेघोल
इतनीऔषधमाहेमेलि तमालपत्र
अकरकराजाणि इलाइचीगजके
शरिआणि ४० मूसलीकोंछउटं
गणालीज मालुकांगणी अरुवल
वीज अजमोदसोफतेजवलहोइ
गोषरूफुनिसतावरीठोइ ४१ वं
शलोचनमधुत्रिकुटाकचूर क
वावचीनीमोचरसपूरसुषिमपीस
टांकदोइदेइ अभ्रकतोलासार
समसोइ ४२ कस्तूरीमासाजुक
पूर अन्नजुमाहेद्योसभचूर टांक
तीनगुटिकावंधाय प्रातसांझए
करषाय ४३ धातवृद्धिवलवं

तउदार मैथुनइत्ताहौवारंवार एं
मनजामएकपरिमान द्रढहोवैलिं
गमुडैनताम॥४४॥ अथअसगंध
पाक॥ चौपई॥ असगंधपईसावत्ती
स इसहूं अर्द्धसोंठिजगीस विस्वा
समफुनिकणामिलाय मिरचए
कपलमाहिमिलाय॥४५॥ तजइला
इचीपत्रतमाल नागकेत्रारिपलर
समडाल महिषीत्तीरपंचपलमात
माषीइणहूं आधीघात॥४६॥ माषी
हूं आधाघ्रतदेह॥ दत्रापलस्वेतषंड
फुनिलेह॥ च्यारेमेलिकडाहेपाइ॥
मंदअग्निसूंएहपचाइ॥ जवहितउफ
णिजुआवैताहि॥ असगंधचूरणदे
माहि॥ अर्द्धसेफुनिपावोषीर त्रिकु

७४ टाचूरणतुरतहीभीर ४१ पक्कहो
इलपसीजुसमान चातुर्जातचूर^
णह्योज्ञान कीटीदीसैदाणादार नी
चातवहीतुरतउतारि ४८ ग्रंथक
जीरातगरजुधना धावैफूलवंसरो
चना मलीयागरछालौजुलवंग
उसीरवह्निअजमोदसुचंग ४८
पुनर्नवाधात्रीघनसार ज्ञातीफल
२ आरोगंधयँसार गिरीछुहाराभेलो
दाष सह्लासमकरराष ५० एकर
गदियाणाभार सुविमकरिभेलोसु
विचार चिकणेभाजनमाहेधरो
आठटांकनितभछणकरो ५१ म
नकाइछाकरोअहार वायचौरासी^
रुधिरविकार सोफसूलअरसका ७४

सस्वासग्रहणीगुल्मकानास ५२ स्त्री
हरोगपांडकमलवाय रोगइत्यादि
कदूरिनसाय एकमासलगनिहचै
षाय वृद्धपुरुषतरुणाह्वैश्राय ५३
सुक्कगात्रप्रफुलितहोइ वालकश्रे
गपूलवहुसोइ वनितापुष्टलाल
होइअंग जोनिकठिनसुषलहैअ
नंग ५४ सुक्कपयोधरहद्धजुया
य नारितरोहियेनहिमाय हीण
अंगमहाहोवैवली सर्वव्याधित
नकीजाइटली ॥५५॥ अथलहस
णपाक ॥५०॥ लहसणकुलीअ
णायतअसैपाईये सुखिमतेहपि
सायसुधूपसुकाईये सक्कप्रस्थ
परमानन्दहसनलैतोलही च्यार

७५ प्रस्थपललेहषोमलेषोलहो ५६ द्वा
दशपैसाघीवमाहि पुनिदीजिये कीटी
तुल्यजवहोइउतादिसुलीजिये रह
सणीवरीगिलोइवासाकचूरहो॥
विष्वाष्टद्वादारूस्वरउमपूरहो ५७॥
चित्राफुनिअजमोदसतावरीआए
हो पुनर्नवापलरपिसजआणहो
कणाजुवायविडंगच्यारहो से
रअठाइषाठपातिकरधारहो॥५
८ सर्वपिसायछणायजुवीचरला
ईए टांकदोइपरिमानकिगुटिका
षाईये सर्वअंगकीसंधिजुवाइजु
नाशहे इनैकंठउरस्थंभदोषस
हुनासहे॥५९॥ अथकामेस्वरगु
७५

टिका॥यो०॥चिं०॥दोहरा॥तजतमा-
लएलाइची गजकेसरि वलवीज
केसरि अरु कंकोलही अकरकरा
फुनि लीज ६० केलिविदारकंद है
सत्ता वरी लवंग वीज उटिंगण अहि
बरा समुद्रसोष ल्यौ चंग ६१ षीर-
कंद फुनि गोषरू मोचरसा जुकपू-
र जातीफल जावित्रिही फुनि अस-
गंधकचूर ६२ नागवली फुनि
मूसली कणाकायफल कूट सौं
फमिरच अरु पिपली अजमोदा
तिलसूठ ६३ पुनर्नवा गजपिप्प-
ली जीरा स्याह सपेद उडद भाडं-
गी भंगुरा काकडासिंगी लेत ६४
कणा कुतासन पाव जड सिंधा मे-

१६ षीसरणवीज त्रिफलाडोडाद्राषही सिं
वलछालपुनिलीज ६५ कनकवी
८ जमुहलेंही त्रयरटांकमिलाय पी
सकापडैछाणाकर अभ्रकसारवं^
गपाइ ६६ भैषजुतैचोथेहि से
विजयानीकीपीस भागदोइसेरषी^
रमै कीटीकरिसुजगीस ६७ सव
हूसितालैद्विगुणी कीजैसवहीये
क मधुघृतसोंगुटिकाकरौटांक
दोइसुविवेक ६८ संध्याएनिति^
लीजिये सिताषीरकरपान स्यं^
भनकैइकजामही ललनाकैहे
रान ६९ संगकीयेतरुणीत्रिया
करैजुवहुतसनेह षीणदेहवहु
पुष्टकैछईषासहरएह ७० कास
१६

स्वासअतिसारहीरोगसलेषमजाई
सरलसुहजिवामधुरता ग्रंथपस्व
रसमगा२ ७१ एकवरषलगषा
ई ये पलितनआवैजाहि कामेस्व
र गुटिकाकही जोगचिंतामणि
मांहि ॥७२॥ अथकामकौतूहल
कौंगुटीवंधेजकौ॥५०॥ कौंछवीज
तमालकुंलिंजनपिप्पली कवा
क्चीनी जलचित्रि२लायचीलौंह
मली गोषरू चंपेफूलमस्तकीचा
ठही आठ२ टांकसवैजुगाठही ७३
सिरसाहीपरमाण लौंगफुनिलीजि
ये कस्तूरीकर्चूर२टांकत्रयदीजिये
सूषिमएहपिसायजुकपडेछाणि
ये कस्तूरीकर्पूरपाछेठाणिये ७४

११ केशरिकैरसनाल गुटिकाधारिहो
भोजनपीछैसांऊ मछुईहुकारहो
कामकौतूहलकेलिकरोनरना^
रिही जामयेकवंधेजवधैगुणका
रही॥१५॥ अथपुस्तरीथंभनगुटी॥
चौपई॥ अकरालेमूसलीस्याहस
पेद्कवावचीनीजातीफललेत क
णमस्तकीतालमषाणा कौछवी^
जगोषरूपुनिधाणा १६ माल^
कागणीमूलीवीज असगंधवहु
फलीलीज वीजउटंगण अरूष^
सषास नागकेशर छुडलेहवास
११ गंधारीकुलिंजन फीम च्यार
रईटाकजुसीम सुषिमपीसिकप
उछराणाय पोस्तपैसातीनिअणाय
११

॥१८॥ च्यारपहररापोजलमांहि पर
भातेरसकाढौसाहि रसपैसाहोइमैम
करोइ पाछैमधुसौंगुटिकाहोइ॥१
९॥ अथवा॥ गुडघृतसितावधाय
टांकदोइसंध्यानैषाय पुस्तरीयंभ
नकह्यौंजुयेह होइअहरवंधेजरहेह
॥८०॥ अथवलवीरनामगुटिका॥
चौपई॥ कनकवीजसिरस्याहीदो
इ वैगणाकेरसवीचिभिजोइ धूप
सुकायफुनिरसमैदेह तीनवारइ
णविधिकराय ८१ सुकायपिसाय
षीरमधिपाइ दू[illegible]धसेरकीटीकर
वाइ पोस्तगिरजुविदारीकंद अज
मोदाहैमूसलीकंद ८२ चोकअ
सगंधवलवीज अकरकरावंशलो

१८ चनलीज तजत्लवंगइलाइचीकण
समकुसोषदालचीनीघण ८३ ज
लविजीत्यौजुकायफलाजातीफ
लदोजीराभला अजवाइणफुनि
तालमषाणा गोषरूतिलसंघाडे
धरणा ८४ लेषससषासफुनिकंको
ल पांच२टांकसमघोल चूरणक
रिकीटीजुरलाय चौथाभागमोच
रसपाइ ८५ सिंवलगूंदमोचरसमा
ष चूरणकरिमेलो तुमजांन षंड
अठारहपैसाभार घृतमधुपंचपंच
लैभार ८६ सर्वमिलायगुटिकाटां
कच्यारि पिछलैपहरषायनिर्धीर
दूधभातमछणफुनिकरै मज्ञाआ
गैरीपगधरै ८७॥सोरठा॥गुटिका
यहवलवीरहरषउपावसनारिन १८

साथगरमकरकैलेपमथेउपरतथा
पुरपुडीयाउपरतथामथेपिछाडा ते
करै॥ काठासिरदुषरेका॥उन्नाभ
केदाले·८ सरपंषामा·५पित्तपाप
डामा·५ जंगीहरडा·८ सेरकच्चापा
णीघायकेकाठाकरै यदपाउपारा
रहैउत्तारलेरा तीनतोलेसहत
मिलायकेछाराकेपिलायदेणा इ
सीभांतदिन ७करै॥सत्यं॥ लेपसि
रकेदर्दका॥ रकवासीरोटीचीलोकी
पकायकेसिरउपरवंधरषैपहर
दोरषैफेरदूरकरै॥ दहिलासिरद
रकावामूर्छाका॥ षसषसमा·६धनी
यामा·२ बोपामा·६ वेदामगिरीमा·६
स्वेतचंदनवूरमा·६ एलायचीछोटी
केविजमा·१ मिसरीपैसे·४ घीयपैसे·२
मरछीवालेनीओषदारगडकेप्याउन
याजस्तूरा॥ मलालेवे॥ सत्यजाननां॥

८३

॥ अथ सिंगरफ षासे का लिषते ॥ लौ
ग मासे ५ जायफल मा. ५ जावत्री मा. ५
केसर मा. ५ कस्तूरी मा. ३ अकरकरा
मा. ५ दालचीनी मा. ५ चोवचीनी मा. १०
मिठा मा. ५ मिरचां मा. १० सौठ मा. ५ पि
प्पला मा. ५ सार मा. ५ चूनी मा. ३ मोती
मा. ३ मूंगा मा. ३ वर्क सुने के मा. २ वर्क
चांदी के मा. ७ सिंगरफ मासे १५ लौवा
ने सत मासे ५ इति विजयादि गुटिका ॥
अथ ज्वरांकुश विषमज्वर को ॥ अकरक
रा टंक ४ गंधक टं. ४ जंगी हरिडै टंक अ
धो इंद्रजौं टं १ पारा टं. ४ गंधक पारे की क
ज्जली करै सब पीस ले गोली वांधणी
तत्काल ज्वर ३ दिन का ज्वर ३ तिजारी
जाय मही जाननां ॥ अथ कनकसुंद
री नाम रस तेरह सन्नपात को ॥ धतूरे
के बीज टंक. २ विषशुद्ध टं. १ मिरचां टं. १
पारा टं. २ गंधक टं. २ सुहागा भुना टं. २ ८३

वीपलटं॰२ पीस छाणिनिंवूरससाथ
षरलै दिन२ पीछे गोलीकरै रत्ती१ते
राहसंन्निपातजाइ सर्वज्वर कफज्व
रजाई॥ औषद द्वादशरोगपरि॥ पारा
गंधक विषु त्रिफला त्रिकुटा नागकेश
र चित्रा रेणुका पिपलामूल वोल सर्वौ
षद् तेदूणागुड कोकनवेर प्रमाणगो
लीवंधणी प्राते उठिके निगले स्वास
कासहोई गुल्म प्रमेह विषमज्वर सोषपां
डु कुष्टसंग्रणी अर्शभगंदर एतेरोगजा
ई॥ अथस्त्री द्रावणरस॥ पारा गंधक
दोनोकीकज्जलीकरै तिनकीवरावरक
नकबीज एसर्व जोषद मिले तेलमहिवी
र्यस्तंभनस्त्रीद्रवै॥ अथइछाभेदीरस॥
पारा टं॰८ गंधक टं॰८ अजेपाल टं॰८ मिर
चा टं॰८ पिपला टं॰८ सर्वपीसिभंगरे
केरसकीपुट७ दे वणीरत्ती१षांडुनाल
देवैसीतलपाणीसेत्तीदीजै वगुहोइ

जमालगोटा=४

८४ जोतन्नेपाणीसेतीहीजैवेगगरहै जलो
दरअलगोत्लाजाय॥ अथस्तंभनकी
मअलीनेअकबरसाहिकोकीता पारा टं
२ गंधकटं २ मस्तकीटं २ इलायचीटं २ के
शरटं २ माजूफलटं २ जवायणखुरासानी
टं २ जंगलीलौंगटं २ मिश्री अफीमटं २
जवत्रीटं २ जाइफलटं २ मोगेकीजड़टं २
मुसककस्तूरीटं २ पारागंधकपहलाखर
लकरणा प्रहर २ फेरसभओषदपाइख
रलकरणा साहितपाइगोलीकरणीटं १
अथवाटं २ की घड़ी ४ दिनरहैतांबाणी
मिठाईखाइतांषलासहोइ सत्यजाननां
॥ अथज्वरांकुश॥ सिपीचूनासि १० हरता
लसि ५ परासि १ अजैपालपिंगोविगेरसि
१ सर्वौषदकुमाररससौंषरलेदिन ३ निरं
तरभीसकाई संपुटकरगजपुटाग्निप्रहर
८ स्वांगसीतलले चावल २ पतासेसोंदेवे
पथमोरभात चीकरणावड्ढैमिषज्वरजावे
नर्ष १ का॥ अथ॥ 

॥ अथ पक्षाघातकौ रस ॥ पारा टं॰ ३ गंधक टं॰ ५ विषुटं॰ ३ पीपलटं॰ १ लौंगटं॰ ८ कनक वीजटं॰ ३ सुहागा टं॰ ३ जाइफलटं ५ मिरचा टं ५ अकरकरा टं ५ सर्वेषि (?) पीस छाया १ आदेके रसकीपुट॰ ३ निंवूरसकीपुट॰ ३ जं भीरीरसकीपुट॰ ३ रत्ती॰ २ पानसोंदेवे सं निसंनिपात अचेतचेतन होइ ८४ वाय जाय १३ संनिपातजाइ पक्षाघातजाय ॥ अथ लिंग कुसा चकरवनको ॥ अनार छाल सेत सरसों सर्वपीस मिठेतेलमें अ वटावे लिंगलेपकरे तथाकुच्च कठन होय ॥ अथ वायगोलेकी ॥ सेंधासौंचर सुहागा संठि पीपलामूल पुहकरमूल अच सम १ लेतीकोर कुडेबीज वस्तुपावे मडाकैरमु षफेरचफेर आकपात नपैट घिसो मार्दी कालेपकरै प्रहरएक कीआंचदेइ निका ले पीसके अधेलाभरषाइ वायगोला जाय ॥ अथ जवायरागुटिकावंधेजकी ॥ जवायरा टं ५ व जवायरा टं ५ षुरासानी जवायरा टं ५ व

८५ लजवायरा टं·५ करकरा टं·५ जायफ
ल टं ५ तिलकाले टं ५ हरमल टं ५ अ
फीम चोषी टं २॥ सर्वपीसि टं १ की गोली
करै दिन घडी टा·२ रहे तव षाइ दूध भा
त षाइ भूष लागे स्तंभन होइ॥ अथ पर
काम्रा गुटिका॥ केशर सि· लौंग सि· जव
त्री सि· दालचीनी सि· नागकेसर सि· समु
द्रफगु टं ४ कस्तूरी रत्ती·२ पिपल सि·१
लसरठे सि· रक्तचंदन सि· जायफल सि·
अफीम सि· तांवेश्वर मासा १ सार मा·१
रूठवेर सि· इलायची सि·१ सर्व ओषद
कपड छाण करणी जुदी २ तिस पि छे
सहित नागोल गोली करणी वेर प्रमाण·
गोली १ संध्या प्रभात षानी वंधेज होइ॥
औषद हथरस की॥ अफीम। जाय
फल। कनकवीज। विषु। गोका घृत सि·
८ कुडाही माहि पावै तत्ता करै। भी दारू
पावै रंग लाल होइ तव उतार राषै छा
रा ... ७ दिन मे पुके रेमत होइ ८५

॥ औषद स्तंभनकी ॥ गिलोइ। मुंडी। वि
ना। मुसली। भांग। सर्व चूर्णकरि खंड घ
त सहित नालगोली करे टं॰ २ वीर्यस्तं
भन होय ॥ औषद विंदकुसादकी ॥ वं
सलोचन सि॰ ४ जीरास्वेत सि॰ ४ सिंघा
डे सि॰ ४ वंग सि॰ ४ सर्व पीसक पड खा
ण करै षाइ विंदकुसाद जाय ॥ औष
द प्रमेहकी ॥ पारा। वंग। सार। इला
यची। कपूर। आवला। जायफल। गोष
रू। मोचरस। मिश्री। सर्व औषद गिलोय
के सींवल के रससेती षरले पुनः सु
काइ मधसेती गोली करै। सर्व प्रमेह
जाय ॥ औषद स्तंभनकी ॥ सिंगरफ। ध
तूरीया। लौंग। मिरचा। चंदन। जायफल
केसर। पिपला। अकरकरा। कस्तूरी। वि
जया। सर्व तुल्य मिश्री ए सर्व औषद सहि
त साछ गोली करै। वीर्यस्तंभन वलमां
स वृद्धि होइ स्त्री पांच भोगै ॥ अथ एला
[illegible] यची। सिलाजीतु
दि चूर्ण ॥ वंग [illegible]

७६ पिपल एओषद पीसचूर्णकैरे चावलांके
धोवणसाथदेवै।मूत्रकृछमूत्ररोगजाइ
॥ओषदधातुचलतीको॥कमलवाय
को॥विसखपरा।जीरापीसजेदूधमा
हिपीवैभलाहोइ॥ओषदधातुको॥स
लियारा पे·दमरपीसबांठसोंबाइ धातु
वंधेजहोइ॥ओषदस्तंभनको॥कंटाइकी
तरी अकरकरा केशर चंदन मस्तकीपी
सगोलीवांधणीरत्ती१वकरीकेदूधना
लिलिंगलेपकेरे ऊपरि इरंडकोपत्रवां
धइ घडी दराषेउपरांतिधोवै श्रीपासजा
रस्तंभनहोइ॥ओषदद्वादशप्रमेहको॥
त्रिफला।दारुहलद इंद्रायण।मोथा।का
ठाकरपीवैसहितपाइपीवै द्वादशप्रमेह
जाइ॥ओषदपीनसको॥सिंगरफ हरता
ल।अकरकरा वायविडंग सर्वपीसधू
णीदेणी पीनसजाइ॥ओषदजोवारंवा
रिछंकैतिसकों॥पिपलछाल।जोपाणी
उवालेप्यावै छंदुरहै॥पुनःनलेरुर ७६

२

गड़ष्यावै छुटेनही॥ अथ कनकसुंदरी
रस नाम तेंह संन्निपात को॥ धतूरे के वीज
टं २ विषु मुद्धट १ मिरचां टं ७ पारो टं २ गं
धक टं २ सुहागा भुंना टं २ पिपल टं २ पीस
छारा निंवू रस मैं षरल दिन २ पीछे गो
ली करै रत्ती १ तेरह संन्निपात जाय सर्व
ज्वर कफ ज्वर जाइ॥ औषद पित्त ज्वर को
॥ चंदन जावत्री। नेत्रमाला॥ पित्तपापडा। मो
छो। सों विहनका चूर्ण पाणी नाल देइ पि
त ज्वर जांइ॥ औषद वायु ज्वर को॥ मिरचां
सोंचर। सौंठि। चिरायता हरडै। पिपली।
कटकी। इन्ह का काढा दैवे। वात ज्वर जाइ
॥ औषद काल ज्वर को॥ दाष। गिलोइ। मो
था। पित्तपापडा। कटकी। इन्ह का काढा दे
वै। कालज्वर जाय॥ औषद विषम ज्वर को॥
ककडासिंगी। त्रिकुटा। त्रिफला। कंटाइ। दो
नो। भाडंगी। पुहकरमूल। सांभर। सेंधा। सो
चर। विड लूण। जवषार। चूर्ण कर तेपा
णी सेती देइ। षई ज्वर षासी कफ जाइ॥ औ
षद कफ ज्वर को॥ मिरचां। पिपला। कोइफ
ल। पीसन ता दीजै॥ कफ ज्वर जाइ। इति श्री॥

९७ ॥ औषद ज्वर उतरे न ही तिसकों ॥ बेरी की छा
ल । कडू पीस छात्ती मैं लेलावै ज्वर उतिरै ॥
अथ कडू चाद क्वाथ ॥ गिलोय । पतीस । धणी
यां । सुंठि । बिल्वकथ । मोथे । नेत्रमाला । पा
ठा । चिरायता । कुडा । चंदन । पन्ही की जड । पद
माष । एकत्र करकाढा दीजै । ज्वर ऽतीसार जाइ
॥ अथ शीतज्वर को काढा ॥ कंटाई । निंबु की छा
ल । मोथा । पलवल । चंदन । कडू । पखाष । बां
सा । सोंठि । पुहेकरमूल । इंद्रजव । गिलोई ।
धणीया । भोंरंगी । पित्तपापडा । इनका काढा
करदेणा । सीतज्वर जाइ ॥ औषद बालक के
ज्वर को ॥ ककडासिंगी । मोथा । पतीस । पीस
छुहारा सहित सेती देइ बालक का ज्वर स्वा
स छर्द कफ सिररोग जाइ ॥ औषद चौथ
ईयाताप को ॥ जाइफल तेलीया पै॰१ पीस
मिठे तेल कच्चे तेल मै रलाइ सरीर मर्दन
करै दिन ७ चौथईया ताप जाइ ॥ दारू छिं
नकी । पारा टं ३ हरताल टं ३ मंगरा टं
२ निंबू टं २ मिठे तेल साथ औषद ले कर
तांबे के पात्र विच घसणा दिन ५ पाछै तल
९७

गाय धूपमैवेरणाहि भजाय॥ तारूस्व
रकी॥ हरडै टं३ हल्नदंट देवचट ३ कु
ठटं ३ पीपलटं३ सूंठट ३ अजमोद टं ३
मुहलठीटं ३ सेंधाट ३ पीसकपडछाण
करिराषनाचूर्णटिं४ घीगोका टं १ दिन
प्रतषाणा २१ दिन षाणा कंठकोकल्ला
साहोई॥ औषदसोषकी॥ कुचलेउवा
लकेकतिरतो। पुन: कुचलेपाली नाल
औषधरलावणो। वाइविडंग। चित्रा। कचूर।
कायफल। कलौंजी। इंद्रजव। ए औष
दपीसकुचलेसतीरलावणो। लेपकूरे
अंगसोषसकलजाय रेरुअरूषंनपीजे
कमलवाउजाय॥ औषदसरीरपीडाकी
॥एरंडिकीजडकीछिलु विलगिरी। कंहा
ईयां दोनो विजोरेकेदल। पाषाणभेदत्रि
कुटा। पिपलामूल। समककाठाकरे॥
तिसमाहिसज्जीपाइपीवे। एरिंडकातेल
पाइपीवे। इतिनी पीडाजाइ। करणपीडा।
गोमेकीपिडा हृदेकीपीडा स्तनकीपीडा।
सकलपीडासभजाइ। नाको वई॥

८८ ॥ सारुसुजाककी॥ जीरासपेदरा रेमदची
नी। फटकडी। गेरू। सुजाकजाइ॥ अथमह
रकीगोली॥ हरडवडीपै॰ १सींधानूणपै॰
१ पिपलापै॰ १ सांठपै॰ १ कौडतूंवेकीजड
पै॰ ४ मर कौडतूंवेकेरसमाहगोलीकर
णी कुडाहीमाहरसपकायलेणा॥ ब्रह्म
गुटिका॥ पीपलापै॰ १ मिरचा १ सिंगरफ
१ मीठाशुद्धपै॰ १ अदरककेरसमागोली
करणी॥ अथपाचणगुटिका॥ सोठपै॰ ४
गंधकआवलेसारपै॰ २ सींधानूणपै॰ २
निंबूकेरसनालगोलीकरणी॥ अथ
मीतांगे शिववटिका॥ पीपलामासेर मिरचामा॰
२१ अकरकरामा॰ २१ सज्जीमा॰ १२ गंधक
मा॰ ८ पारामा॰ ३ जवषारमा॰ ३ मीठामा॰ ३
रतीर अदरककेरसमागोलीकरणी॥ अथ
षदराहकवटिका॥ लौंगपै॰ १ मिरचा
पै॰ १ वहेडेकाछिलकपै॰ १ कथ्थपै॰ ३ कि
करकेछालकेरसमागोलीकरणीरती॥
वहीफलका॥ उमालगोटेसोधनेमहि
केजोवरमाहफेरदूधमाहिसोधने। जेहू

पै॰२ कथ्थपै॰१सोंठपै॰१गोलीनानीनालक
रणी॥ वरीफाडीकेवेरअमारणा॥ वटीद
स्तवंदकी॥ छुहारे॰२फीममा॰२हलदीमा
१गुडमावटीकरणी॥ अथ्थचदनीछेदवं
दकरणकी॥ एलालघुलवंगनागके
सर। वेरहिडकाकीगिरू। चिलाधाना
की। फूलप्रयंग। मोथे। चंदन। पिपला
मा॰२ मिश्रीवरोवर। सहत मा॰७२ छे
दरोगजाई॥ अथ्थचटिनीबांसीकी॥ गंधक
मा॰२पारामा॰१ठेककेकोयलेपै॰३ बांसीह
दै॥ औषदधातुवंदकी॥ काहूपै॰१धणीया
मा॰७ वुरफापै॰१स्वेतखसखसपै॰१हला
चारों औषदानोकुटकेपडछाणकरै। फ
कीमा॰५कीले।सन्वेरोपाणीगठेनालले
औषदवंधकीवायआनकी॥ अकरक
रामा॰७ वडयाईकीजडमा॰७ अनारकीछा
लमा॰७ मिरचामा॰७ सज्जीमा॰७ नूणसींधा
मा॰७ नूणसांभरमा॰७ फीममा॰७ अजमो
दमा॰७ वांसेकेपरमा॰७ किकरकीछाल

८८ मा॰१ अदरककेरसना लगोली करणी मा॰१॥
को॥ याकूनीकुवतकोहौल दिलकोदिल
कोकुवतकरदीहै॥ काहूपै॰१ मगजवरवू
जापै१ मगजकदूपै॰१ मगजवीरपै१ गुलापै॰ ल
मोतीमा॰४॥ चूनीमा॰४॥ संगयस्म मा॰४॥ अव
रेसमममा॰४॥ संदलसुरषमा॰४॥ कपूरभेम
सैनीमा॰४॥ चंदनसफेदमा॰८ छोटीलायची
केवीजमा॰८ वंसलोचनमा॰८ गुलसुरषपै॰२ अग
रगरकीमा॰६ कचूरमा॰६ दरूनजअकरवी
मा॰६ वहमसफेदमा॰६ केसरमा॰३ काहजु
वागिलानीपै॰१ मुसकमा॰१ अंवरमा॥१॥ वरक
चांदीकेमा॰१ वरकसोनेकेमा॰१ सेउकापानी
सेर१ अनारदाणातोले४ मिसरीसासहि
तत्रिगुणी॥ षुराकमासे४॥ अथ॥ अथ
ब्राह्मीगुटिकालिष्यते॥ ब्राह्मीमासे२१
तजमा॰४ लौंगमा॰४ केसरमा॰४ पिपला
मा॰४ जायफलमा॰४ जवत्रीमा॰४ एलालाल
पुमा॰४ तेजवलकाछिलकामा॰४ अकरक
रामा॰४ अजमोदमा॰४ चवकमा॰४ कुलंज
नमा॰४ चित्रामा॰४ सोंठमा॰४ पिपलामूलमा॰

४ पुहकरमूलमा४ संषाहोलीमा.४ अज
मायणमा४ मिरचामा.४ चवरायतामासे४
कवावचीनीमा४ इंद्रजौमिठेमा.४ नाग
केसरमा४ सतावरमा४ तमालपत्रमा४
देवदारमा.४ सभतेदूनीमुनक्का गोलीटां
२ कीवांधनी चित्तभ्रमउनमाद विकारस
न्नपातसभजाय। भलाहोय॥ औषद उदर
विकारकी॥ दंतीवीजटं.१ गेरूटं.१ कडु
टंर कुमारकेरसनालगोली करणीमे
ददासम॥ क्वाथमत्रकृच्छ्रको॥ हरडपै.१
गोषरूपै.१ धनीयापै.१ जुवाहापै.१ पषाण
भेदपै.१ अंवलतासपै.१ सहतपै.१ पाव
नामासे.३ ॥दारूनषूरकी॥ लोदा१ वहेडा
कीकरकाफूल। आंवलो। चारेसमकरपी
सवदीकरपाणीसेती दिन७ नषूरऊपर
लगावइनषूरजाय॥ गोलीउपधंसकी
पारामा.२ भलावे.२ षुरासानीजमायण
मासे५ अजमायण। अडवमा.५ गुडपुरा
णामासे२० गोलीकरणीया७ गोलीमा
सेधा॥ कीकरी

८० औषद उपदंस की॥ सिंगरफ मासे ४ पारा मा. ४ अफीम मा. १ पिपलामूल मा. २८ सर्व पीस कपड छाण करिकै। अफणा गुड पु राणा। तिसमै गोली १४ करणी। दोनो वषत षाइ गोके दूधनाल। पथ्य करणा। चणे की रोटी अलूणी षाई॥ पुनः दारू॥ निंबु की छिल। फरमाह की छिल। अंब की छिल तीनो वस्ता पीवै तमाषू सो। फिरंग जाइ॥ पुनः सिंगरफ मासे ३ सुहागा तेलीया मासे ३ अक्क के कोइले यो हो कर पीवै। फिरंग जाइ॥ औषद जले की॥ जंगी हरडा सि. १ मिरचा सि. १ नीला थोथा सि. १ मुनक्के तेरा। पंजाह ५० निंबू के रस नाल गोली को कन वेर प्रमाण करे। गो के दही नाल षाई। मछी मांस न षाइ। और सभ कुछ षाइ॥ औ षद विंद कुसाद की॥ लौंग टं. १ इलायची टं. २ जाइफल टं. २ जावत्री टं. २ सुंठि टं. २ मिरचा टं. २ पिपला टं. २ पिपलामूल टं. २ षुरासानी अजवाइण टं. २ मालकंगुणी टं. २ मूसली स्याह टं. २ मोच की जड टं. २ अफीम टं. २ भंग रा टं. २ ६

